वैशाख शुक्ल - 3 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 11 ■ अंक - 281 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » शुक्रवार » 10-05-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 राम मंदिर पर 'बाबरी ताला' लगाने का आरोप 'सरासर झूठ' : प्रियंका

6 तप, शक्ति एवं मंगल का पर्व है अक्षय तृतीया

7 इमरान खान ने नौ मई के दंगों पर माफी मांगने से किया इनकार

फर्स्ट टेक

मार्सेली में शुरू हुई ओलंपिक मशाल रिले

मार्सेली (फ्रांस)/एपी। यूनान से तीन मस्तूल वाले जहाज पर सफर करके फ्रांस के दक्षिणी तटवर्ती शहर मार्सेली पहुंची पेरिस ओलंपिक की मशाल का सफर इस शहर की सड़कों से शुरू हुआ । मशाल अपने 11 सप्ताह के सफर में 450 से अधिक शहरों में 10000 मशालवाहकों के हाथों से गुजरकर 26 जुलाई को ओलंपिक के उद्घाटन समारोह में पहुंचेगी । मार्सेली टीम के लिये नब्बे के दशक में खेलने वाले फुटबॉल खिलाड़ी बासिले बोली ने बृहस्पतिवार को मशाल रिले की शुरूआत नोत्रे डैम डे ला गार्डे बेसिलिका से की । बास्केटबॉल खिलाड़ी टोनी पार्कर , एक तलवारबाजी चैम्पियन, एक स्केटबोर्डर, मिचेलिन में बसे एक शेफ और एक कॉमेडियन को भी मशाल थामने के लिये चुना गया ।

एयर इंडिया एक्सप्रेस के चालक दल के सदस्यों ने हड़ताल वापस ली

नई दिल्ली/भाषा। एयर इंडिया एक्सप्रेस के चालक दल के सदस्यों के एक वर्ग ने हड़ताल वापस लेने और काम पर लौटने का निर्णय किया है। एयरलाइन प्रबंधन के चालक दल के सदस्यों के मुद्दों पर गौर करने के आश्वासन के बाद यह कदम उठाया गया है। वहीं एयरलाइन ने चालक दल के 25 सदस्यों की बर्खास्तगी का पत्र वापस लेने पर सहमति जतायी है। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन ने मंगलवार रात से 170 उड़ानों को रद्द किया है। एयरलाइन में कथित कुप्रबंधन के विरोध में चालक दल के सदस्यों के एक वर्ग के 'बीमार' होने की सूचना के बाद एयर इंडिया एक्सप्रेस ने उड़ानों को रद्द किया। राष्ट्रीय राजधानी में बृहस्पतिवार को मुख्य श्रम आयुक्त (केंद्रीय) के कार्यालय में चालक दल के सदस्यों के प्रतिनिधियों और एयरलाइन प्रतिनिधियों के बीच सुलह बैठक के दौरान हड़ताल और बर्खास्तगी पत्र वापस लेने पर सहमति बनी।

यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने बजरंग को निलंबित किया

नई दिल्ली/भाषा। कुश्ती की वैश्विक संचालन संस्था यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने डोप परीक्षण कराने के लिए इनकार करने पर बजरंग पूनिया को अस्थाई तौर पर निलंबित करने के राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) के फैसले के बाद उन्हें साल के अंत तक निलंबित कर दिया है। हालांकि हैरानी भरे फैसले में नाडा के निर्णय की जानकारी होने के बावजूद भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) ने बजरंग की विदेश में ट्रेनिंग के लिए लगभग नौ लाख रुपये की राशि स्वीकृत की। देश के सबसे सफल पहलवानों में से एक बजरंग को नाडा ने 23 अप्रैल को निलंबित किया था।

10-05-2024 सूर्यास्त 6:26 बजे | 11-05-2024 सूर्योदय 5:44 बजे

BSE	NSE
72,404.17	21,957.50
(-1,062.22)	(-345.00)

सोना	चांदी
7,370 रु.	86,500 रु.
(24 कैरेट) प्रति ग्राम	प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

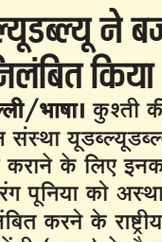

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

वाद या विवाद

किसके कर्मों के फल का है,
कड़वा तीखा या मिष्ट स्वाद ।
है कौन चोर या साहुकार,
जनता रखती है सदा याद्।
पुरखों को ना गाली देवें,
जिनको सुन जन में हों विषाद।
वोटों के खातिर नेतागण,
बस वाद करे ना ही विवाद ।।

पिराना गांव में सूफी संत, उनके परिजनों की कब्रें तोड़े जाने के बाद झड़प, 37 लोग गिरफ्तार

कुछ मतभेदों के कारण एक न्यासी ने मंगलवार रात पिराना गांव में सूफी संत इमामशाह बावा और उनके परिवार के सदस्यों की कब्रें तोड़ दीं जिसके बाद दोनों समुदायों के सदस्यों ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंके।

अहमदाबाद/भाषा। पुलिस ने अहमदाबाद के बाहरी इलाके में स्थित पिराना दरगाह में एक सूफी संत और उनके परिवार के सदस्यों की कब्रें तोड़े जाने के बाद दो समूहों के बीच हुई झड़प के संबंध में 37 लोगों को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी ने बताया कि मंगलवार रात हुई झड़प के दौरान दोनों समुदायों के सदस्यों ने एक दूसरे पर पथराव किया जिसके कारण कुछ लोग घायल हो गए।

पिराना दरगाह का प्रबंधन इमामशाह बावा रोजा न्यास द्वारा किया जाता है जो हिंदू-मुस्लिम सौहार्द का प्रतीक रहा है और इसके न्यासी दोनों समुदायों के सदस्य हैं। अहमदाबाद (ग्रामीण) पुलिस के अधीक्षक ओमप्रकाश जाट ने कहा, ''कुछ मतभेदों के कारण एक न्यासी ने मंगलवार रात पिराना दरगाह में सूफी संत इमामशाह बावा और उनके परिवार के सदस्यों की कब्रें तोड़ दीं जिसके बाद दोनों समुदायों के सदस्यों ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंके।'' जाट ने बताया कि यह मामला सामने आने पर देर रात दोनों समुदाय के लोग बड़ी संख्या में दरगाह स्थल पर एकत्र हो गए। उन्होंने बताया कि स्थिति को नियंत्रित करने और कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस की एक टीम भी मौके पर पहुंची। उन्होंने कहा, ''लेकिन दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर पथराव शुरू कर दिया जिससे पुलिस कर्मियों सहित कुछ लोग घायल हो गए।'' उन्होंने बताया कि घटना के बाद दोनों पक्षों ने अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई।

तमिलनाडु के शिवकाशी में पटाखा कारखाने में विस्फोट

नौ कर्मचारियों की मौत, 10 अन्य घायल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

विरुधुनगर (तमिलनाडु)/भाषा। शिवकाशी में बृहस्पतिवार को एक पटाखा कारखाने में आग लगने से पांच महिलाओं समेत नौ कर्मचारियों की मौत हो गई जबकि 10 अन्य घायल हो गए। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि विरुधुनगर जिले के शिवकाशी के पास सेंगमालापट्टी में पटाखा कारखाने में हुई दुर्घटना में पांच महिलाओं समेत नौ लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि जिन सात कमरों में पटाखे रखे हुए थे वे पूरी तरह जल गए। पुलिस और अग्निशमन सेवा के कर्मियों ने घायलों को शिवकाशी के सरकारी अस्पताल पहुंचाया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आग लगने की वजह का पता लगाया जा रहा है और कारखाने के पास जरूरी लाइसेंस उपलब्ध था।

घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, मृतकों के परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने घटना पर शोक व्यक्त करते हुए जिले के अधिकारियों को घायलों को उचित चिकित्सा देखभाल प्रदान करने और लोगों की जान बचाने का निर्देश दिया।

वैजयंतीमाला, चिरंजीवी, दिवंगत न्यायाधीश एम. फातिमा बीवी पद्म पुरस्कार से सम्मानित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुजरे जमाने की अभिनेत्री वैजयंतीमाला बाली, तेलुगू अभिनेता कोनिडेला चिरंजीवी, उच्चतम न्यायालय की पहली महिला न्यायाधीश (दिवंगत) एम फातिमा बीवी और ''बॉम्बे समाचार'' के मालिक एच. एन. कामा समेत अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बृहस्पतिवार को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया।

राष्ट्रपति भवन में आयोजित नागरिक अलंकरण समारोह में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता ओ. राजगोपाल, लद्दाख के दिवंगत आध्यात्मिक नेता तोगदान रिनपोचे तथा तमिल अभिनेता दिवंगत ''कैप्टन'' विजयकांत (दोनों मरणोपरांत), गुजराती समाचार पत्र ''जन्मभूमि'' के समूह संपादक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) कुंदन व्यास को भी पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वैजयंतीमाला (90) और चिरंजीवी (68) को पद्म विभूषण से नवाजा गया, वहीं बीवी, कामा, राजगोपाल, विजयकांत, रिनपोचे और व्यास को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। बीवी, विजयकांत और रिनपोचे के परिवार के सदस्यों ने पुरस्कार प्राप्त किए।

हरियाणा राजनीतिक संकट :

राज्यपाल से किया विपक्षी दलों ने संपर्क

चंडीगढ़/भाषा। हरियाणा में कांग्रेस और जननायक जनता पार्टी (जजपा) ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार के राज्य विधानसभा में अल्पमत में आने के बाद उसे सत्ता से बेदखल करने के अपने प्रयास तेज करते हुए राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय से संपर्क किया है। राज्यपाल को लिखे अलग-अलग पत्रों में जजपा और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने विधानसभा में शक्ति परीक्षण की मांग की है। कांग्रेस की हरियाणा इकाई ने बृहस्पतिवार को राज्यपाल कार्यालय को एक पत्र भेजकर उनसे मिलने और राज्य की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर एक ज्ञापन सौंपने के लिए शुक्रवार का समय मांगा।

मोदी के हाथों से फिसलता जा रहा है लोकसभा चुनाव : राहुल गांधी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि लोकसभा चुनाव धीरे-धीरे प्रधानमंत्री राहुल गांधी के हाथ से फिसलता जा रहा है और अब वह देश के युवाओं को ध्यान भटकाने के लिये कुछ नया नाटक करने की कोशिश करेंगे।

एक वीडियो संदेश में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने युवाओं से प्रधानमंत्री के प्रचार से विचलित न होने का आग्रह किया और उन्हें आश्वासन दिया कि चार जून को एक बार जब विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस' अपनी सरकार बना लेगा तो वह उन्हें 15 अगस्त तक 30 लाख नौकरियां देने का काम शुरू कर देगी।

युवाओं को देश की ताकत बताते हुए गांधी ने कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव मोदी के हाथ से फिसल रहा है और वह अब प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। उन्होंने कहा, चुनाव उनके हाथ से निकलता जा रहा है। वह फिसल रहे हैं और वह भारत के प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। उन्होंने अगले चार-पांच दिनों में आपका ध्यान भटकाने और किसी तरह का नाटक करने का फैसला किया है। लेकिन आपका ध्यान नहीं भटकना चाहिए।

गांधी ने 'एक्स' पर हिंदी में एक पोस्ट में कहा, देश के युवाओं! चार जून को 'इंडिया' की सरकार बनने जा रही है और हमारी गारंटी है कि 15 अगस्त तक हम 30 लाख रिक्त सरकारी पदों पर भर्ती का काम शुरू कर देंगे। नरेन्द्र मोदी के झूठे प्रचार से भटकना मत, अपने मुद्दों पर डटे रहना। 'इंडिया' की सुनो। नफरत नहीं, नौकरी चुनो। उन्होंने कहा कि इस समय देश में बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है और मोदी ने वादा किया था कि वह दो करोड़ युवाओं को रोजगार देंगे। उन्होंने झूठ बोला और उन्होंने नोटबंदी की, गलत जीएसटी (माल एवं सेवा कर) लागू किया और पूरी तरह से (उद्योगपति गौतम) अडाणी जैसे लोगों के लिए काम किया।

गांधी ने अपने वीडियो संदेश में कहा, हम भारती भरोसा योजना ला रहे हैं। चार जून को 'इंडिया' सरकार का गठन होने जा रहा है और 15 अगस्त तक हम भारती भरोसा योजना के माध्यम से 30 लाख युवाओं को नौकरी देने का काम शुरू कर देंगे।

एनआईए ने जम्मू-कश्मीर में आतंक से जुड़ी चार और संपत्तियां जब्त कीं

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने देश में आतंकी नेटवर्क पर अपनी कार्रवाई जारी रखते हुए बृहस्पतिवार को जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा क्षेत्र में आतंकवादी संगठन हिज्ब-उल-मुजाहिदीन के सदस्यों की चार संपत्तियों को जब्त कर लिया। यह कार्रवाई एनआईए द्वारा कश्मीर और भारत के अन्य हिस्सों में आतंकी ढांचे को नष्ट करने के अपने अभियान के तहत प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन 'जैश-ए-मोहम्मद' (जेईएम) के एक शीर्ष आतंकवादी की छह अचल संपत्तियों को जब्त करने के एक दिन बाद हुई है। एनआईए की जांच के अनुसार, बृहस्पतिवार को कुर्क की गई चार संपत्तियां आतंकवाद के जरिये अर्जित की गयी थी।

रूस ने अमेरिका पर भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का लगाया आरोप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मॉस्को/भाषा। रूस ने अमेरिका पर भारत के घरेलू मामलों और मौजूदा चुनावों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि अमेरिका ने उसके देश में एक खालिस्तानी आतंकवादी की हत्या की साजिश में भारतीय नागरिकों की संलिप्तता होने का कोई ठोस सबूत अभी तक मुहैया नहीं कराया है।

अमेरिकी संघीय अभियोजकों ने भारतीय नागरिक निखिल गुप्ता पर गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की नाकाम साजिश में एक भारतीय सरकारी कर्मचारी के साथ मिलकर काम करने का पिछले साल नवंबर में आरोप लगाया था। आतंकवाद के आरोपों में भारत में वांछित पन्नू के पास अमेरिका और कनाडा की दोहरी नागरिकता है। उसे केंद्रीय गृह मंत्रालय ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत आतंकवादी के रूप में सूचीबद्ध किया था।

'वाशिंगटन पोस्ट' ने अपनी एक रिपोर्ट में दावा किया है कि भारत रूस और सऊदी अरब जैसी नीतियों को अपनाने की कोशिश कर रहा है। इस बारे में प्रतिक्रिया मांगे जाने पर रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने कहा, ''हमारे पास जो जानकारी है उसके मुताबिक वाशिंगटन ने अभी तक जी एस पन्नू की हत्या की साजिश में भारतीय नागरिकों की संलिप्तता का कोई विश्वसनीय सबूत नहीं दिया है। साक्ष्यों के अभाव में इस विषय पर अटकलें लगाना अस्वीकार्य है।'' उन्होंने कहा कि अमेरिका को भारत की राष्ट्रीय सोच एवं इतिहास की समझ नहीं है और वह भारत में धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में ''निराधार आरोप'' लगाता रहता है। जखारोवा ने कहा, ''अमेरिका नई दिल्ली के खिलाफ नियमित रूप से निराधार आरोप लगाता रहता है... हम देखते हैं कि वे न केवल भारत बल्कि कई अन्य देशों पर भी धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन करने के आधारहीन आरोप लगाते हैं जो दर्शाता है कि अमेरिका भारत की राष्ट्रीय सोच को नहीं समझता।

भारत-मालदीव संबंधों का विकास आपसी हितों, पारस्परिक संवेदनशीलता पर आधारित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

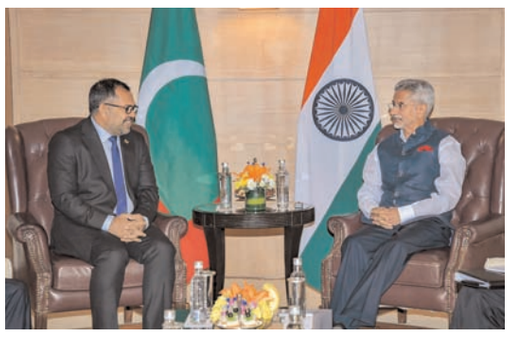

नई दिल्ली/भाषा। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मालदीव के अपने समकक्ष मूसा ज़मीर के साथ बातचीत में कहा कि दोनों देशों के रिश्तों का विकास 'आपसी हित' और पारस्परिक संवेदनशीलता' पर आधारित है।

जयशंकर की यह टिप्पणी छह महीने पहले मालदीव में, चीन समर्थक राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज़्ज़ू के पदभार संभालने के बाद दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों में आई खटास के बीच आई है।

ज़मीर के साथ अपनी बातचीत शुरू करते हुए जयशंकर ने कहा, करीबी और निकटतम पड़ोसी होने के नाते हमारे संबंधों का विकास स्पष्ट रूप से आपसी हितों और पारस्परिक संवेदनशीलता पर आधारित है। उन्होंने कहा, जहां तक भारत का सवाल है तो यह हमारी पड़ोस प्रथम नीति और सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) दृष्टिकोण में व्यक्त किया गया है। मुझे आशा है कि आज की हमारी बैठक में हम विभिन्न क्षेत्रों में हमारे दृष्टिकोणों को मजबूत कर पाएंगे। मुइज़्ज़ू द्वीपीय राष्ट्र से भारतीय सैन्य कर्मियों की वापसी पर जोर दे रहे हैं जिससे दोनों देशों के संबंधों में गंभीर तनाव पैदा हो गया था।

भारत पहले ही अपने अधिकतर सैन्यकर्मियों को वापस बुला चुका है। मुइज़्ज़ू ने अपने देश से भारतीय सैन्य टुकड़ियों की वापसी के लिए 10 मई की समय सीमा तय की थी।

लोकसभा चुनाव में

मुकाबला विकास के लिए वोट और 'जिहाद के लिए वोट' के बीच है : शाह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हैदराबाद/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2024 का चुनाव राहुल गांधी बनाम नरेन्द्र मोदी है और इसमें मुकाबला विकास के लिए वोट और 'जिहाद के लिए वोट' के बीच है। तेलंगाना के भोनगीर लोकसभा क्षेत्र में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'भारतीय गारंटी' और राहुल गांधी की 'चीनी गारंटी' के बीच हैं।

कांग्रेस, भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) और ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) को 'तुष्टीकरण की तिकड़ी' बताते हुए शाह ने कहा कि ये दल राम नवमी जुलूस नहीं निकालने देते और संशोधित नागरिकता अधिनियम (सीएए) का विरोध भी करते हैं। उन्होंने कहा, ''ये लोग हैदराबाद मुक्ति दिवस (17 सितंबर) नहीं मनाने देते। ये लोग सीएए का विरोध करते हैं। ये लोग तेलंगाना को शरिया और कुरान के आधार पर चलाना चाहते हैं।''

शाह ने दावा किया कि लोकसभा चुनाव के अब तक हुए पहले तीन चरणों में भाजपा को करीब 200 सीटों पर जीत मिलेगी और पार्टी को 400 सीट के लक्ष्य को पार कराने में मदद के लिए तेलंगाना को वोट देना होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा ने 2019 में तेलंगाना की 17 में से चार लोकसभा सीट पर जीत हासिल की थी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी को समझ लेना चाहिए कि भाजपा इस चुनाव में 10 सीट से ज्यादा पर विजय सुनिश्चित करेगी। उन्होंने कहा कि तेलंगाना में दोहरे अंकों में सीट की संख्या प्रधानमंत्री मोदी को 400 सीट के पार ले जाएगी।

भाजपा पर संविधान बदलने और आरक्षण समाप्त करने के कांग्रेस के आरोपों का जिक्र करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि कांग्रेस झूठ के सहारे चुनाव लड़ना चाहती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कहती है कि मोदी आरक्षण समाप्त कर देंगे लेकिन उन्होंने पिछले 10 साल में पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में रहते हुए ऐसा कुछ नहीं किया।

शाह ने आरोप लगाया कि तेलंगाना में हालांकि कांग्रेस ने मुसलमानों को चार प्रतिशत आरक्षण देकर अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) के आरक्षण में सेंध लगाई। उन्होंने कहा कि भाजपा सत्ता में आई तो मुस्लिम आरक्षण को समाप्त कर देगी और एससी, एसटी और ओबीसी आरक्षण बढ़ाएगी। शाह ने कहा, ''मोदी जो कहते हैं, वो करते हैं। राहुल बाबा की गारंटी सूरज डूबने तक भी नहीं चलती।''

सरकार कर रही सांप्रदायिक विभाजन पैदा करने की कोशिश : विपक्ष

नई दिल्ली/भाषा। विपक्षी नेताओं ने बृहस्पतिवार को भाजपा पर उस रिपोर्ट को लेकर सांप्रदायिक विभाजन पैदा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया जिसमें भारत में 1950 से 2015 के बीच हिंदुओं की आबादी घटने का दावा किया गया है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के महासचिव डी राजा और राजद नेता तेजस्वी यादव ने जनगणना नहीं कराने पर केंद्र सरकार की आलोचना की और कहा कि प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) की रिपोर्ट 'विवाद उत्पन्न कर वोट हासिल करने का प्रयास है।' रिपोर्ट के बारे में पूछे जाने पर यादव ने कहा कि भाजपा नफरत फैलाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा, 2020-21 में जो जनगणना होनी थी, वह अब तक नहीं हुई है, यह 2024 है... उनका उद्देश्य केवल देश के लोगों को गुमराह करना और नफरत फैलाना है। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एजेंडा है और भाजपा ने दस साल तक इस देश के लोगों को मूर्ख बनाया है तथा वह फिर से ऐसा करना चाहती है।''

राजा ने रिपोर्ट के समय पर सवाल उठाते हुए कहा, ''प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ऐसे समय में यह रिपोर्ट क्यों लेकर आई है जब देश में चुनाव हो रहा है? प्रधानमंत्री पहले से ही मुसलमानों के नाम पर लोगों का ध्रुवीकरण करने की कोशिश कर रहे हैं... वह ऐसे सभी मुद्दे उठा रहे हैं। लोगों को ऐसी रिपोर्ट से सावधान रहना चाहिए।'' उन्होंने कहा, यह 1950 से 2015 के बीच का अध्ययन है। श्री मोदी 2014 में सत्ता में आए। इस सरकार ने कोई जनगणना नहीं कराई है, कोविड के कारण मरने वालों का कोई विवरण नहीं दिया है। उन्होंने प्रवासी श्रमिकों, गरीबी पर कोई ब्योरा नहीं दिया। लेकिन यह डेटा कैसे एकत्र किया गया? बिहार की बेगूसराय सीट से चुनाव लड़ रहे केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री सिंह ने कहा कि कुछ लोग देश को गुमराह करना चाहते हैं, लेकिन सच्चाई छिप नहीं सकती। सिंह ने दावा किया, 1947 में, हमारे यहां लगभग 88 प्रतिशत आबादी हिंदू थी, अब हम 70 प्रतिशत हैं। मुसलमान आठ प्रतिशत थे, अब सरकारी आंकड़े कहते हैं कि वे 15-16 प्रतिशत हैं, मैं कहूंगा कि वे 20 प्रतिशत हैं। उन्होंने आरोप लगाया, कांग्रेस ने इस देश को धर्मशाला बना दिया। 1971 में जो बांग्लादेशी घुसपैठिए आए, उन्होंने भारत और बिहार को रोहिंग्या, बांग्लादेशियों का अभयारण्य बना दिया... उन्हें वोट बैंक में बदल दिया गया, यह सनातन को खत्म करने की साजिश थी। अब वे पिछले दरवाजे से आरक्षण दे रहे हैं।'' सिंह ने दावा किया, ''हिंदू आबादी घट रही है, मुस्लिम आबादी बढ़ रही है... इससे पता चलता है कि आने वाले दिनों में वे भारत को इस्लामिक देश बनाना चाहते हैं।''

भारत में 1950-2015 के बीच हिंदू आबादी 7.8 प्रतिशत घटी, मुसलमानों की आबादी 43.15 प्रतिशत बढ़ी

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के हालिया कार्य दस्तावेज में कही गई है यह बात

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारत में 1950 से 2015 के बीच हिंदुओं की आबादी में 7.82 प्रतिशत की कमी आई है जबकि मुसलमानों की आबादी में 43.15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिससे पता चलता है कि देश में विविधता को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के हालिया कार्य दस्तावेज में यह बात कही गई है।

हालाँकि, इसमें पूर्ण ब्योरा नहीं दिया गया। देश में पिछली बार जनगणना 2011 में हुई थी और 2021 में होने वाली जनगणना नहीं हो पाई है। यह भी स्पष्ट नहीं है कि ईएसी-पीएम संबंधित आंकड़ों पर कैसे पहुंची। 'धार्मिक अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी: एक राष्ट्रव्यापी विश्लेषण (1950-2015)' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की आबादी में जैन समुदाय के लोगों की हिस्सेदारी 1950 में 0.45 प्रतिशत थी जो 2015 में घटकर 0.36 प्रतिशत रह गई। ईएसी-पीएम की सदस्य शमिका रवि के नेतृत्व वाली एक टीम द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में कहा गया कि 1950 से 2015 के बीच बहुसंख्यक हिंदू आबादी की हिस्सेदारी में 7.82 प्रतिशत की कमी आई है जो संबंधित अवधि में 84.68 प्रतिशत से घटकर 78.06 प्रतिशत रह गई। इसमें कहा गया कि 1950 में देश में मुसलमानों की आबादी 9.84 प्रतिशत थी और 2015 में बढ़कर यह 14.09 प्रतिशत हो गई जो संबंधित अवधि में 43.15 प्रतिशत बढ़ी है। रिपोर्ट के अनुसार, 1950 और 2015 के बीच ईसाइयों की आबादी 2.24 प्रतिशत से बढ़कर 2.36 प्रतिशत हो गई और संबंधित अवधि में इसमें 5.38 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसमें कहा गया कि 1950 में सिखों की आबादी 1.24 प्रतिशत थी जो बढ़कर 2015 में 1.85 प्रतिशत हो गई तथा संबंधित अवधि में यह 6.58 प्रतिशत की वृद्धि है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पारसी आबादी में 85 प्रतिशत की भारी कमी आई है। इस समुदाय की आबादी 1950 में कुल जनसंख्या का 0.03 प्रतिशत थी लेकिन 2015 में यह केवल 0.004 प्रतिशत रह गई।

इसमें कहा गया कि संबंधित आंकड़ों से संकेत मिलता है कि समाज में विविधता को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण है। इसमें कहा गया कि अनुकूल दृष्टिकोण के माध्यम से उचित माहौल और सामाजिक समर्थन प्रदान किए बिना समाज के वंचित वर्गों के लिए बेहतर जीवन परिणामों को बढ़ावा देना संभव नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया कि बहुसंख्यक आबादी की हिस्सेदारी में कमी और इसके परिणामस्वरूप अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी में वृद्धि से पता चलता है कि सभी नीतिगत कार्यों, राजनीतिक निर्णयों और सामाजिक प्रक्रियाओं का शुद्ध परिणाम समाज में विविधता बढ़ाने के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करना है। इसमें कहा गया कि बहुसंख्यकों की आबादी में वैश्विक स्तर पर गिरावट के साथ ही भारत में भी बहुसंख्यकों की आबादी में 7.82 प्रतिशत की कमी आई है। रिपोर्ट में कहा गया, दक्षिण एशियाई पड़ोस के व्यापक संदर्भ में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की आबादी बढ़ी है, और बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, भूटान तथा अफगानिस्तान जैसे देशों में अल्पसंख्यक आबादी में चिंताजनक रूप से कमी आई है। इसमें कहा गया कि यह आश्चर्य की बात नहीं है, इसीलिए, पड़ोस से अल्पसंख्यक आबादी दबाव के समय भारत आती है।

रिपोर्ट में कहा गया कि सभी मुस्लिम बहुल देशों में बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की आबादी में वृद्धि देखी गई। हालांकि, मालदीव ऐसा मुस्लिम बहुल देश है जहां बहुसंख्यक समूह (शाफी सुन्नियों) की हिस्सेदारी में 1.47 प्रतिशत की गिरावट आई है। बांग्लादेश में, बहुसंख्यक धार्मिक समूह की हिस्सेदारी में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो भारतीय उपमहाद्वीप में इस तरह की सबसे बड़ी वृद्धि है। 1971 में बांग्लादेश के निर्माण के बावजूद पाकिस्तान में बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय (हनफ़ी मुस्लिम) की हिस्सेदारी में 3.75 प्रतिशत की वृद्धि और कुल मुस्लिम आबादी की हिस्सेदारी में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

रिपोर्ट के अनुसार, गैर-मुस्लिम बहुसंख्यक देशों में म्यांमा, भारत और नेपाल में बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की हिस्सेदारी में गिरावट आई है। इसमें रेखांकित किया गया कि वर्ष 1950 दो प्रमुख कारणों से आधारभूत वर्ष के रूप में महत्वपूर्ण है। रिपोर्ट के अनुसार, यह साल उस समय के आसपास था जब नवनिर्मित संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार ढांचे ने अल्पसंख्यक अधिकारों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए सरकारों की जिम्मेदारी को अंतरराष्ट्रीय कानून में मुख्यधारा में लाने के साथ आकार लेना शुरू किया था।

यह अध्ययन रिपोर्ट दुनिया भर में अल्पसंख्यकों की स्थिति का एक विस्तृत राष्ट्रव्यापी वर्णनात्मक विश्लेषण है जिसमें 1950 और 2015 के बीच 65 वर्षों में किसी देश की जनसंख्या में उनकी बदलती हिस्सेदारी को मापा गया है। विश्लेषण में शामिल 167 देशों के लिए, 1950 के आधारभूत वर्ष में बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की हिस्सेदारी का औसत आंकड़ा 75 प्रतिशत है, जबकि 1950 और 2015 के बीच बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की आबादी में परिवर्तन का औसत (माइनस)21.9 है। रिपोर्ट में कहा गया कि जनसंख्या आंकड़ों में अत्यधिक परिवर्तन का सामना करने वाले 40 देशों में से 21 अफ्रीका से हैं। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) से जुड़े उच्च आय वाले 35 देशों में बहुसंख्यकों की आबादी में औसतन 29 प्रतिशत की कमी आई है जो वैश्विक औसत से महत्वपूर्ण रूप से अधिक है। रिपोर्ट के निष्कर्ष में कहा गया, इसका मतलब है कि विश्व स्तर पर, बहुसंख्यक धार्मिक संप्रदाय की हिस्सेदारी लगभग 22 प्रतिशत कम हो गई है।''

मुस्लिम आबादी में वृद्धि की गति पर भाजपा ने जताई चिंता, आरक्षण के मुद्दे पर कांग्रेस को बनाया निशाना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने देश में मुस्लिम आबादी में वृद्धि की गति पर बृहस्पतिवार को चिंता जताई और आश्चर्य जताया कि मुसलमानों को आरक्षण देने पर तुली कांग्रेस यदि सत्ता में आती है तो इससे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को मिले आरक्षण पर क्या असर पड़ेगा।

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने इस बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा, ''यह एक बहुत ही प्रसिद्ध तथ्य है, जो लगभग एक दशक से सार्वजनिक जानकारी में है। यदि आप 1951 की जनगणना को देखें तो हिंदुओं की आबादी 88 प्रतिशत और

मुसलमानों की 9.5 प्रतिशत थी। वर्ष 2011 की जनगणना में हिंदुओं की आबादी 80 प्रतिशत से घटकर 79.8 प्रतिशत रह गई जबकि मुसलमानों की आबादी 14.5 प्रतिशत से अधिक हो गई।'' उन्होंने कहा, ''लेकिन सवाल यह उठता है कि अगर इस रफ्तार से देश की आबादी बढ़ती है और जिस प्रकार से कांग्रेस मुस्लिमों को आबादी के आधार पर आरक्षण देने पर तुली हुई है तो वे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ओबीसी के हिस्से में कटौती करेंगे।''

त्रिवेदी ने कहा कि अगर कांग्रेस सत्ता में आती है तो मुस्लिम आबादी बढ़ने के साथ भविष्य में आरक्षण के हिस्से में बदलाव करना जारी रखेगी। उन्होंने कहा, ''इसकी अधिक संभावना है क्योंकि उनमें (मुसलमानों) में कई शादियों का चलन है।'' उन्होंने कहा कि धर्मांतरण और घुसपैठ के कारण भी आरक्षण में मुसलमानों की हिस्सेदारी बढ़ती रहेगी क्योंकि उन्हें (कांग्रेस का) धर्मनिरपेक्ष कवर मिल गया है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा, ''इसलिए यह एक बड़ा सवाल है और बड़ी चुनौती भी, जिसका उन्हें (कांग्रेस को) जवाब देना होगा।''

उद्धव ठाकरे मानसिक संतुलन खो चुके हैं: फडणवीस का दावा

मुंबई/भाषा। अपने पूर्व सहयोगी की आलोचना पर प्रतिक्रिया देते हुए महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने बृहस्पतिवार को कहा कि शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। एक दिन पहले एक चुनावी रैली में ठाकरे ने फडणवीस और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को दिल्ली का इशारा मिलने पर बोलने वाले व्यक्ति बताया। फडणवीस ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''उद्धव ठाकरे अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं। उन्हें इलाज की जरूरत है। वह इस तरह की बातें इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्हें चुनाव में हार साफ नजर आ रही है।''

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता ने कहा कि लोगों ने शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख को नकार दिया है, इसलिए वह अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव के बाद ठाकरे ने पुरानी सहयोगी भाजपा से नाता तोड़कर सरकार बनाने के लिए अविभाजित राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और कांग्रेस से हाथ मिला लिया था।

छह नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

सुकमा/भाषा। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में दो महिलाओं समेत छह नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण किया है जिनके सिर पर कुल 36 लाख रुपए का इनाम था। पुलिस अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। सुकमा जिले के पुलिस अधिकारियों ने बताया कि बृहस्पतिवार को छह दुर्दांत नक्सलियों-- दूधी पोज्जा (27), उसकी पत्नी दूधी पोज्जे (24), महिला नक्सली जयक्का उर्फ आयते कोरसा (51), कवासी मुड़ा (30), कारम नारन्ना उर्फ भूमा (65) और रैनु उर्फ मड़कम सुक्का (35) ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण किया। उन्होंने बताया कि नक्सली दूधी पोज्जा के सिर पर आठ लाख रुपये, दूधी पोज्जे के सिर पर आठ लाख रुपये, जयक्का के सिर पर पांच लाख रुपये, कवासी मुड़ा के सिर पर पांच लाख रुपये, कारम नारन्ना के सिर पर पांच लाख रुपये और रैनु के सिर पर पांच लाख रुपये का इनाम था।

खुली जेल स्थापित करना जेलों में भीड़ कम करने का समाधान हो सकता है : उच्चतम न्यायालय

नई दिल्ली/भाषा। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि खुली जेल स्थापित करना जेलों में भीड़भाड़ कम करने का समाधान हो सकता है और इससे कैदियों के पुनर्वास के मुद्दे का भी समाधान हो सकता है। अर्ध-खुली या खुली जेल प्रणाली के तहत दोषियों को दिन के दौरान परिसर के बाहर आजीविका कमाने और शाम को वापस लौटने की अनुमति होती है। इस अवधारणा को दोषियों को समाज में आत्मसात करने और उनके मनोवैज्ञानिक दबाव को कम करने के लिए लाया गया था क्योंकि उन्हें बाहर सामान्य जीवन जीने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जेलों और कैदियों से संबंधित एक याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने कहा कि वह देश भर में खुली जेलों की मौजूदगी का विस्तार करना चाहती है। पीठ ने कहा, जेलों में भीड़भाड़ की समस्या का एक समाधान खुली हवा वाली जेलों/शिविरों की स्थापना करना हो सकता है। उक्त प्रणाली राजस्थान राज्य में कुशलतापूर्वक काम कर रही है। जेल में भीड़भाड़ की समस्या के समाधान के अलावा, यह कैदियों के पुनर्वास के मुद्दे का भी समाधान करती है।

तीन चरणों के मतदान ने किया मोदी को बेचैन : पवार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पुणे/भाषा। राकांपा (शरदचंद्र पवार) प्रमुख शरद पवार ने बृहस्पतिवार को कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव के पहले तीन चरणों के मतदान ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बेचैन कर दिया है और इसीलिए उन्होंने अपने भाषणों में खुलेआम मुस्लिम समुदाय का जिक्र करना शुरू कर दिया है। पश्चिमी महाराष्ट्र के सतारा में पत्रकारों से बातचीत में पवार ने क्षेत्रीय दलों के कांग्रेस में विलय संबंधी अपनी टिप्पणी के बारे में कहा कि कई राजनीतिक दलों की विचारधारा कांग्रेस की विचारधारा के समान है।

तीन चरण का मतदान पूरा होने के बाद लोकसभा चुनाव के उनके आकलन के बारे में पूछे जाने पर पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, ''ऐसा लगता है कि इन तीनों चरणों का मतदान मोदी को बेचैन कर रहा है और ऐसा कहने का कारण यह है कि इन चरणों के मतदान के बाद प्रधानमंत्री मोदी के सुर बदल गए हैं।'' पवार ने कहा, उन्होंने (मोदी) अपने भाषणों में खुलेआम मुस्लिम समुदाय का जिक्र करना शुरू कर दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें लगता है कि सांप्रदायिक विचार लाने से स्थिति बदल जाएगी। मेरा मानना है कि उनकी पार्टी में कुछ लोग सोचते हैं कि जैसे-जैसे मतदान के चरण पूरे हो रहे हैं उनका पद खतरे में पड़ता जा रहा है।''

उनकी पार्टी के कांग्रेस में संभावित विलय के बारे में पूछे जाने पर पवार ने कहा कि उन्होंने कभी ऐसी कोई टिप्पणी नहीं की। पवार ने हाल में एक अखबार को दिए साक्षात्कार में कहा था कि अगले कुछ साल में कई क्षेत्रीय दल कांग्रेस के और करीब आएंगे या उसमें विलय कर लेंगे।

सही मायनों में भाजपा सरकार 'मंगलसूत्र छीनने के लिए' जिम्मेदार : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने बृहस्पतिवार को मोदी सरकार पर आम भारतीयों से 'धन की निकासी' उद्योगपतियों के लिए करने का आरोप लगाते हुए कहा कि सही मायनों में 'मंगलसूत्र छीनने के लिए' भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार जिम्मेदार है। एक दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि राहुल गांधी ने अडाणी और अंबानी को 'गाली देना' बंद कर दिया है और क्या उनकी पार्टी को बदले में इनसे पैसा मिला है।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत का भरोसा जताते हुए एक बयान में कहा, ''चार जून को जैसे ही कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार सत्ता संभालेगी, हम आर्थिक विकास में तेजी लाएंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि आम भारतीय परिवार सबसे बड़े लाभार्थी हों। हम भारतीय परिवारों से मित्र पूंजीपतियों की तरफ होने वाली 'धन की निकासी' को समाप्त करेंगे।'' उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर साझा किए गए एक बयान में कहा कि 150 साल पहले दादाभाई नौरोजी ने 'धन की निकासी' का सिद्धांत दिया था और उन्होंने बताया था कि कैसे भारत के लोगों का धन लूटकर ब्रिटेन भेजा जा रहा था।

मुझे अवसर नहीं मिला क्योंकि मैं शरद पवार का बेटा नहीं हूं : अजित पवार

पुणे/भाषा। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) के अध्यक्ष शरद पवार के बेटे नहीं हैं इसलिए उन्हें राजनीतिक अवसर नहीं मिला। राकांपा नेता अजित पवार ने कहा कि 80 साल की उम्र के बाद नए लोगों को मौका दिया जाना चाहिए। उन्होंने शरद पवार के इस बयान पर कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ बातचीत हुई थी लेकिन उसके साथ जाने के संबंध में बातचीत नहीं हुई थी, कहा कि कम से कम उन्होंने यह तो स्वीकार किया कि बातचीत हुई थी। अजित पवार ने साथ ही कहा कि वे बातचीत के साक्षी हैं। पिछले साल जुलाई में अजित पवार और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के आठ अन्य विधायक महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे-भाजपा सरकार में शामिल हो गए। इस घटना के बाद वह राकांपा बंट गई थी जिसका गठन शरद पवार (83) ने किया था। पुणे जिले के शिरूर में एक रैली को संबोधित करते हुए अजित पवार ने कहा, ''मेरी उम्र भी 60 से ऊपर है। हमारे पास कोई मौका है या नहीं? क्या हम गलत बर्ताव कर रहे हैं? इसीलिए हम भावुक हो जाते हैं।

हज ज़ायरीन का पहला जत्था सऊदी अरब के लिए रवाना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीनगर/भाषा। जम्मू-कश्मीर से हज ज़ायरीन का पहला जत्था बृहस्पतिवार को सऊदी अरब के लिए रवाना हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों के मुताबिक, 642 ज़ायरीन दो उड़ानों से इस्लाम के सबसे पवित्र स्थल मक्का और मदीना के लिए रवाना हुए हैं। अधिकारियों ने कहा कि इस साल जम्मू-कश्मीर से 7,000 से अधिक ज़ायरीन हज पर जाएंगे।

जब रिश्तेदारों ने हज ज़ायरीन को विदा किया तब श्रीनगर के हज हाउस में भावनात्मक दृश्य देखने को मिला। हज इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है और हर साल दुनियाभर के मुस्लिम इसे करने के लिए मक्का और मदीना जाते हैं।

एनबीएफसी सोने के बदले कर्ज में 20,000 रुपये से अधिक नकदी न दें : आरबीआई

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) से कहा है कि वे आयकर कानूनों के अनुरूप सोने के बदले कर्ज देते समय 20,000 रुपये से अधिक नकद भुगतान न करें। रिजर्व बैंक ने इस सप्ताह की शुरुआत में सोने के बदले कर्ज देने वाले वित्त प्रदाताओं (फाइनेंसर) और सूक्ष्म-वित्त संस्थानों को दी गई एक सलाह में उन्हें आयकर अधिनियम की धारा 269एसएस का पालन करने के लिए कहा है। आयकर अधिनियम की धारा 269एसएस में प्रावधान है कि कोई व्यक्ति भुगतान के निर्दिष्ट तरीकों के अलावा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा की गई जमा या ऋण स्वीकार नहीं कर सकता है। इस धारा में नकदी की स्वीकृत सीमा 20,000 रुपये है।

इस परामर्श के कुछ सप्ताह पहले केंद्रीय बैंक ने आईआईएफएल फाइनेंस के निरीक्षण के दौरान कुछ चिंताएं नजर आने के बाद उसे स्वर्ण ऋण स्वीकृत करने या वितरित करने से रोक दिया था। रिजर्व बैंक की इस सलाह पर टिप्पणी करते हुए मणप्पुरम फाइनेंस के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) वी पी नंदकुमार ने कहा कि इसमें नकद ऋण देने के लिए 20,000 रुपये की सीमा दोहराई गई है। उन्होंने कहा कि मणप्पुरम फाइनेंस के आधे कर्ज ऑनलाइन माध्यम से वितरित किए जाते हैं और शाखाओं से मिलने वाले ऋण के लिए भी ज्यादातर ग्राहक सीधे हस्तांतरण को प्राथमिकता देते हैं।

इंडेल मनी के सीईओ उमेश मोहनन ने कहा कि इस निर्देश से पारदर्शिता और बेहतर अनुपालन लाने में मदद मिलेगी लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कई लोगों के औपचारिक बैंकिंग प्रणाली का हिस्सा न होने से प्रभाव पड़ सकता है। मोहनन ने कहा कि यह निर्देश अनजाने में हाशिए पर मौजूद तबकों को आपात स्थिति में भी स्वर्ण ऋण तक पहुंच से बाधित कर सकता है जिससे वित्तीय पहुंच सीमित हो सकती है।

भाजपा नेता नवनीत राणा का ओवैसी भाइयों पर तीखा हमला, कहा- 15 सेकंड के लिए पुलिस हटा दें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हैदराबाद/भाषा। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी और उनके भाई अकबरुद्दीन पर तीखा हमला करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता नवनीत राणा ने कहा कि अगर ''15 सेकंड के लिए पुलिस को ड्यूटी से हटा दें तो दोनों भाइयों को पता नहीं चलेगा कि वे कहां से आए और कहां गए।''

राणा का बयान एआईएमआईएम विधायक अकबरुद्दीन ओवैसी के 2013 में दिए गए उस विवादित भाषण के जवाब में आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर पुलिस को हटा दिया जाए तो देश में ''हिन्दू-मुस्लिम अनुपात'' को बराबर लाने में उन्हें केवल ''15 मिनट'' लगेंगे।

महाराष्ट्र की अमरावती लोकसभा सीट से भाजपा की उम्मीदवार राणा ने कहा, ''छोटा (अकबरुद्दीन) बोलता है कि पुलिस को 15 मिनट के लिए हटाओ तो दिखाएंगे कि हम क्या कर सकते हैं। मेरा कहना है तुम 15 मिनट लगाओगे पर हमको 15 सेकंड लगेंगे। अगर 15 सेकंड पुलिस को हटाया तो छोटे और बड़े को यह पता नहीं लगेगा- कहां से आए और कहां गए।'' उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर टिप्पणी करते हुए एक वीडियो क्लिप साझा किया है। राणा बुधवार को तेलंगाना में हैदराबाद लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार माधवी लता और अन्य के समर्थन में प्रचार कर रही थीं। उनकी टिप्पणियों के बारे में पूछे जाने पर एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहना चाहेंगे कि वह एक घंटा दें।

ओवैसी ने संवाददाताओं से कहा, ''मोदी जी के पास सत्ता है, 15 सेकंड नहीं बल्कि एक घंटा लीजिए। हम भी देखना चाहेंगे कि कोई इंसानियत बची है या नहीं। कौन डरा हुआ है? आपको कौन रोक रहा है? दिल्ली में प्रधानमंत्री आपके हैं। आरएसएस आपका है। सब कुछ आपका है। हमें बताएं कि कहां आना है। हम अवश्य आएंगे।''

नवनीत राणा की कथित टिप्पणी पर कि एआईएमआईएम को वोट देने पर वोट पाकिस्तान को जाएगा, ओवैसी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा को देश की विविधता और बहुलवाद से नफरत है और आरएसएस की विचारधारा को हराना चाहिए। ओवैसी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी 2014 में अचानक अफगानिस्तान से पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के आवास पर पहुंच गए थे। उन्होंने कहा, ''यह क्या था?'' उन्होंने कहा कि मोदी ने मुसलमानों को घुसपैठिया बताया और यह भी कहा कि मुसलमान अधिक बच्चे पैदा करते हैं और वही भाषा इस्तेमाल की जा रही है।

शिवकाशी में पटाखा कारखाने में विस्फोट से मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 9 हुआ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

विरुधुनगर (तमिलनाडु)। शिवकाशी में बृहस्पतिवार को एक पटाखा कारखाने में आग लगने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 9 हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने घटना पर शोक व्यक्त करते हुए जिला अधिकारियों को घायलों को उचित चिकित्सा देखभाल प्रदान करने और लोगों की जान बचाने का निर्देश दिया।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि श्रमिक फैंसी किस्म के पटाखे बनाने के लिए अत्यधिक ज्वलनशील रसायनों को मिलाने में लगे हुए थे, तभी घर्षण के कारण उनमें आग लग गयी। आग की लपटों ने देखते ही देखते सात गोदामों को अपने चपेट में ले लिया, जहां भारी मात्रा में तैयार पटाखों और रसायनों का भंडार रखा हुआ था। इसके बाद हुए भीषण विस्फोटों में पांच महिलाओं समेत आठ श्रमिकों की मौत हो गयी। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि रसायनों को मिश्रित करते समय घर्षण से आग लग गयी, हालांकि विस्फोट के कारणों की विस्तृत जांच की जा रही है। पुलिस और अग्निशमन सेवा के कर्मियों ने घायलों को शिवकाशी के सरकारी अस्पताल पहुंचाया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आग लगने की वजह का पता लगाया जा रहा है और कारखाने के पास जरूरी लाइसेंस उपलब्ध था। मुख्यमंत्री स्टालिन ने विस्फोट में पांच महिलाओं और तीन पुरुषों की मौत पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि दुर्घटना की जानकारी मिलते ही उन्होंने जिला कलेक्टर को तुरंत बचाव अभियान शुरू करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि यह पता चला है कि 10 से अधिक लोग घायल हुए हैं और उन्हें चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है। स्टालिन ने यहां एक विज्ञप्ति में कहा, मैंने अधिकारियों को घायलों के लिए उचित जीवनरक्षक उपचार सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है।

उन्होंने कहा, राज्य सरकार (चार जून तक आदर्श आचार संहिता लागू होने के कारण) निर्वाचन आयोग से उचित सहमति प्राप्त करने के बाद प्रभावित परिवारों को राहत देगी। उन्होंने शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त की।

बेंगलूरु-भुवनेश्वर के बीच विशेष ट्रेन कल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। दक्षिण पश्चिम रेलवे से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार बेंगलूरु-भुवनेश्वर के बीच विशेष ट्रेन (06247/06248) सेवाएं संचालित की जाएंगी। गर्मी की छुट्टियों में बेंगलूरु और भुवनेश्वर स्टेशनों पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए इस ट्रेन का संचालन किया जा रहा है। केएसआर बेंगलूरु से ट्रेन नंबर 06247 शनिवार 11 मई को सुबह 5:15 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 8:30 बजे भुवनेश्वर स्टेशन पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन नंबर 06248 रविवार 12 मई को सुबह 9:30 बजे भुवनेश्वर से प्रस्थान कर अगले दिन दोपहर 12.45 बजे केएसआर बेंगलूरु स्टेशन पहुंचेगी।

रास्ते में, विशेष ट्रेनों का ठहराव दोनों दिशाओं में कृष्णराजपुरम, बंगारपेट, जोलारपेट्टई, काटपाडी, रेनिगुंटा, गुडूर, नेल्लोर, ओंगोल, विजयवाड़ा, राजमुंदरी, समालकोट, दुव्वाडा, कोत्तावलासा, विजयनगरम, श्रीकाकुलम रोड, पलासा, ब्रह्मपुर और खुर्दा रोड स्टेशन पर रहेगा। स्पेशल ट्रेन में कुल 19 कोच होंगे। ट्रेन में आरक्षण किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए रेलवे की हेल्पलाइन नं. 139 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बीबीएमपी स्कूल का 68.74 प्रतिशत परिणाम रहा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कुमारी चंदन एवं यशवंत टीजे

बेंगलूरु। शैक्षणिक वर्ष 2023-24 में, बृहद् बेंगलूरु महानगर निगम के शिक्षा विभाग के 33 हाई स्कूलों के छात्र एसएसएलसी परीक्षा ली गई। कुल 2501 छात्र परीक्षा में शामिल हुए और 1719 छात्र 68.737 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण हुए। बीबीएमपी मत्तिकेरे गर्ल्स हाई स्कूल ने 92.78 का रिजल्ट देकर टॉप रैंक हासिल की और निगम का नाम रोशन किया। वहीं बीबीएमपी भैरवेश्वर नगर हाई स्कूल 91.98 और दूसरा स्थान हासिल किया। बी.बी.एम.पी. हीरोहल्ली हाई स्कूल 90.56 और तीसरा स्थान हासिल किया।

वर्ष 2023-24 में कुल 66 प्रतिशत विद्यार्थी 85 प्रतिशत से अधिक का स्कोर उच्चतम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। श्रीरामपुर गर्ल्स हाई स्कूल की कु. चंदन पी. को 625 फीसदी में से 619 अंक मिले हैं। उन्होंने 99.007 अंक प्राप्त किये और निगम का नाम रोशन किया। लग्गेरे हाई स्कूल के विद्यार्थी यशवंत टी.जे. ने 625 अंकों में से 610 अंक प्राप्त किए। उन्होंने 97.60 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निगम का नाम रोशन किया।

बेंगलूरु में गुरुवार को राजभवन में पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल थावरचन्द गहलोत से मुलाकात की और एक अपील पत्र सौंपा।

सांसद प्रज्ज्वल रेवन्ना से संबंधित यौन उत्पीड़न मामले की एसआईटी जांच 'पटरी से उतर' रही है : जद (एस)

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। जनता दल-सेकुलर (जदएस) के नेता एचडी कुमारस्वामी ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि उनके भतीजे और हासन से सांसद प्रज्ज्वल रेवन्ना के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों की विशेष जांच दल (एसआईटी) की तफ्तीश 'पटरी से उतर' रही है। पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत को एक ज्ञापन सौंपेगी। कुमारस्वामी ने कहा कि वह चाहते हैं कि दोषी को कानून के मुताबिक सज़ा मिले लेकिन उन्होंने एसआईटी द्वारा की जा रही जांच की प्रगति पर सवाल उठाए। एसआईटी का गठन कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने किया है।

अपहरण के आरोपों का सामना कर रहे प्रज्ज्वल के पिता एवं विधायक एचडी रेवन्ना के खिलाफ जांच को लेकर भी सवाल उठाते हुए कुमारस्वामी ने पूछा कि कथित रूप से अगवा की गई महिला को मुक्त कराए जाने के बाद अबतक अदालत में पेश क्यों नहीं किया गया है।

जदएस नेता ने कहा, ''हम राज्यपाल को ज्ञापन दे रहे हैं कि जांच कैसे पटरी से उतर रही है... मैं पहले दिन से कह रहा हूं कि जिसने भी गलत किया है उसे सजा मिलनी ही चाहिए। जिस तरह से चीजें हो रही हैं, उसे देखकर ऐसा लगता है कि इनमें से कोई भी नहीं चाहता कि दोषी को सजा मिले, बल्कि प्रचार चाहता है... जांच शुरू होने के बाद से अब तक क्या उपलब्धि (प्रगति) हासिल हुई है?

कुमारस्वामी ने कहा, ''अपहृत महिला को यहां लाए कितने दिन हो गए? क्या उसका बयान सीआरपीसी की धारा 164 (मजिस्ट्रेट द्वारा बयान दर्ज करना) के तहत दर्ज किया गया है? क्या उसे न्यायाधीश के सामने पेश किया गया है? पांच दिन हो गए, महिला को न्यायाधीश के सामने पेश क्यों नहीं किया गया? वह कहां से लाई गई थी? क्या उसे किसी फार्महाउस से लाया गया था जैसा कि मीडिया में दावा किया गया और खबरें आईं?'' उन्होंने यह भी सवाल किया कि एसआईटी ने अब तक यह जानकारी क्यों साझा नहीं की है। जदएस नेता ने कहा कि महिला को यहां लाए हुए पांच दिन हो गए हैं और उन्होंने इस पर कुछ भी नहीं कहा है कि अपहरण के लिए रेवन्ना जिम्मेदार थे या नहीं।

कुमारस्वामी ने कहा, अदालत के सामने सच्चाई क्यों नहीं रखी जाती? उन्होंने अपनी आपत्ति दर्ज कराने के लिए सोमवार तक का समय मांगा है। इसका मतलब है कि वे रेवन्ना को तीन दिन और जेल में रखना चाहते हैं। वे (कांग्रेस नेता) अपनी नफरत निकालना चाहते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, वे दोषियों के लिए सजा नहीं चाहते। मुझे नहीं पता कि चार जून (लोकसभा चुनाव परिणाम) के बाद मुद्दा खत्म हो जाएगा या नहीं। रेवन्ना को बुधवार को यहां एक मजिस्ट्रेट अदालत ने 14 मई तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

कुमारस्वामी के भाई रेवन्ना को एक महिला के कथित अपहरण के मामले में एसआईटी ने गिरफ्तार किया था। प्रज्ज्वल रेवन्ना पर कई महिलाओं का यौन शोषण करने का आरोप है। इस कांड ने राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है और सत्तारूढ़ कांग्रेस और भाजपा-जदएस आपस में भिड़ गए हैं। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार ने बुधवार को आरोप लगाया था प्रज्ज्वल रेवन्ना से कथित तौर पर संबद्ध आपत्तिजनक वीडियो प्रसारित करने में कुमारस्वामी का हाथ है, उन्हें ''ब्लैकमेलिंग'' में महारथ हासिल है और वह कहानी के मुख्य पात्र, निर्देशक और निर्माता हैं। इस बाबत पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कुमारस्वामी ने कहा, हां, मैं निर्माता, निर्देशक हूं और मैं कहानी का नायक भी हूं... शिवकुमार चाहते हैं कि मैं कहानी का नायक बनूं, है ना? मुझे खुशी है कि उन्होंने मुझे कहानी के नायक के रूप में स्वीकार कर लिया है।

दसवीं कक्षा बोर्ड परिणाम में लड़कियों ने मारी बाजी

बागलकोट जिले की छात्रा ने मारी बाजी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक स्कूल एग्जामिनेशन एंड असेसमेंट बोर्ड ने गुरुवार को दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के नतीजों की घोषणा की। इन नतीजों में लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया। वहीं ग्रामीण इलाकों के छात्र आगे रहे। राज्य में इस साल कुल मिलाकर 73.40 प्रतिशत छात्रों ने परीक्षा पास की। परीक्षा देने वाले 8.69 लाख छात्रों में से 6.31 लाख छात्र उत्तीर्ण हुए। 81.11 प्रतिशत परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ छात्राओं ने लड़कों पर बढ़त हासिल की। लड़कों का उत्तीर्ण प्रतिशत 65.90 रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल 74.17 प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण हुए, जबकि शहरी क्षेत्रों में 72.83 प्रतिशत छात्र बोर्ड परीक्षा पास करने में सफल रहे। कर्नाटक बोर्ड ऑफ स्कूल एग्जामिनेशन एंड असेसमेंट बोर्ड ने गत 25 मार्च से 26 अप्रैल तक हुई एसएलएलसी परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है। परीक्षा में कुल 4,36,138 छात्रों ने भाग लिया। जिसमें से 2,87,416 छात्र (65.9 प्रतिशत) से पास हुए। वहीं 4,23,829 में से 81.11 प्रतिशत छात्राएं कुल 3,41,829 छात्राएं पास हुई।

उडुप्पी जिला 90 प्रतिशत परिणाम के साथ शीर्ष पर रहा, उसके बाद दक्षिण कन्नड़ (92.12 प्रतिशत) और शिवमोग्गा (88.67 प्रतिशत) जिले रहे। यादगीर जिला अंतिम स्थान पर रहा, जहां केवल 50.59 प्रतिशत छात्र बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने में सफल रहे। उत्तरी कर्नाटक के बागलकोट जिले के मुधोल शहर में सरकार द्वारा संचालित मोरारजी देसाई आवासीय विद्यालय में पढ़ने वाली अंकिता बसप्पा कोन्नुरु कुल 625 में से 625अंक हासिल कर टॉपर बनीं। सात छात्रों ने 624 अंक हासिल किए, 14 ने 623 अंक हासिल किए। वहीं, 21 छात्रों ने 622 अंक हासिल किए, 44 ने 621 अंक और 44 छात्रों ने 625 में से 620 अंक हासिल किए।

बेंगलूरु दक्षिण जिले का परिणाम 79 फीसदी रहा और वह राज्य में 12वें स्थान पर रहा। बेंगलूरु उत्तरी जिले ने 77.09 प्रतिशत परिणाम हासिल किया और राज्य में 14वें स्थान पर रहा। बेंगलूरु ग्रामीण ने 83.67 प्रतिशत परिणाम प्राप्त किया और राज्य में 9वें स्थान पर रहा। राज्य के कुल 78 स्कूलों में शून्य परिणाम आए और राज्य में कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 10.49 प्रतिशत कम हो गया। 2023-24 में 83.89 प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण हुए थे और इस बार छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत 73.40 प्रतिशत रहा। अनुसूचित जाति समुदाय के छात्रों में से 70.79 प्रतिशत ने परीक्षा उत्तीर्ण की और अनुसूचित जनजाति के 69.22 प्रतिशत छात्रों ने परीक्षा उत्तीर्ण की। नतीजों की घोषणा स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रधान सचिव रितेश कुमार सिंह, केएसईएबी अध्यक्ष एन. मंजूश्री और निदेशक एच.एन. गोपालकृष्ण ने की।

कांग्रेस की ओर से नस्लीय दुर्व्यवहार : आर अशोक

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। बीजेपी ने सैम पित्रोदा की नस्लवादी टिप्पणी की निंदा की। दक्षिण भारत के लोगों का इतिहास पाँच हजार वर्ष पुराना है। विधान सभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने बिना जाने-समझे हमें अफ्रीकी कहकर शांति के बगीचे में खलल डाला है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए उन्होंने कहा कि सैम पित्रोदा का बयान कांग्रेस की मानसिक स्थिति को दर्शाता है. नस्लवाद और रंग के बारे में बात करना कांग्रेस के डीएनए में है।' इससे पहले डीके सुरेश ने बैकग्राउंड सिंगर के तौर पर अपनी बात रखी थी। अब पित्रोदा ने देश को तोड़ने वाली बात कही है। उन्होंने कहा कि इसके जरिए कांग्रेस की विचारधारा बताई गई है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री सिद्दरामैया ने रंग की गारंटी दी है. रंगभेद के कारण अतीत में कई मौतें हुई थीं। नेल्सन मंडेला और महात्मा गांधी ने इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी। लेकिन कांग्रेस ने लोगों के दिमाग को रंग के आधार पर बांट दिया है। हम 5 हजार साल के इतिहास वाले अफ्रीकी कहलाते हैं। उन्होंने सवाल किया कि कांग्रेस ओक्कालिगा, लिंगायत और दलितों को क्या रंग देगी।

होंडा का नया रिसर्च एवं शोध केन्द्र बेंगलूरु में

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। होंडा मोटर कंपनी लिमिटेड की इकाई और भारत में मोटरसाइकिलों एवं पावर प्रोडक्टों के लिए होंडा की शोध एवं विकास शाखा होंडा आर एंड डी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड ने गुरुवार को यहां अपना नया सोल्युशन आर एंड डी सेंटर शुरू किया। कंपनी ने यहां जारी एक विज्ञप्ति में बताया कि होंडा ने 2050 तक अपने सभी उत्पादों एवं कॉर्पोरेट गतिविधियों में शून्य कार्बन उत्सर्जन हासिल करने का विश्वस्तरीय लक्ष्य रखा है। कंपनी अपने पावर सोर्सेज़ में अपने उत्पादों की व्यापक रेंज को कार्बन न्युट्रल बनाने के लिए काम कर रही है। मोटरसाइकिल कारोबार की बात करें तो होंडा ने 2040 के दशक तक अपने सभी मोटरसाइकिल उत्पादों में कार्बन न्युट्रेलिटी हासिल करने का लक्ष्य तय किया है।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया का महत्व

डॉ. दिलीप धींग
dakshinbharat.com

भारतीय संस्कृति में बैशाख सुदी तीज का आखा तीज पर्व के रूप में अतिशय महत्व है। आखा तीज शब्द अक्षय तृतीया का लोक प्रचलित प्राकृत रूप है। जैन धर्म में यह दिन प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव के वर्षीतप के पारणे से जुड़ा है। दीक्षा के बाद भगवान ऋषभदेव लगभग 400 दिनों तक निरंतर निराहार रहे थे। आखा तीज के दिन उन्हें हस्तिनापुर में श्रेयांसकुमार ने इक्षुरस से पारणा करवाया। वह प्रथम तीर्थंकर की प्रथम तपस्या का प्रथम पारणा था। भगवान ऋषभदेव के सम्यक् तप और श्रेयांसकुमार के उत्कृष्ट सुपात्र दान के कारण वह तिथि हमेशा के लिए अक्षय बन गई।

भगवान आदिनाथ के पारणे के सम्मान में हजारों जैन धर्मावलम्बी उनके वर्षभर के एकांतर उपवासों का समापन इसी दिन करते हैं। जबकि इसका शुभारंभ भगवान ऋषभ जन्म कल्याणक चैत्र बदी आठम से करते हैं। इस प्रकार एक वर्षीतप 400 से भी अधिक दिनों का हो जाता है। कई बार कई तपस्वी उपवास के स्थान पर बेला तेला जैसी तप भी कर लेते हैं। इस प्रकार इन 400 दिनों में छह माह से अधिक समय तपस्या में और छह माह से कम समय आहार में व्यतीत होता है।

जैन् दर्शन में तपस्या का मुख्य लक्ष्य आत्मशुद्धि और कर्म निर्जरा होता है। इसके अलावा जीवाजीवाभिगम सूत्र में लिखा है कि तपस्वियों के तप के प्रभाव से अनेक आपदाएं और उपद्रव टल जाते हैं। तपस्या से अनेक बीमारियां भी मिट जाती है। जैन समाज में हजारों तपस्वी वर्षीतप और अनेक अन्य तपस्याएं करते हैं। यदि हम सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से देखें तो उनकी तपस्या के फलस्वरूप देश में लाखों टन अनाज की बचत होती है। यह अनाज परोक्ष रूप से भुखमरी से लड़ने में काम आता है। इस प्रकार तपस्या से कई प्रकार के लाभ हैं। आज के उपभोक्तावादी युग में हजारों जैन तपस्वियों द्वारा साल दर साल वर्षीतप की आराधना विस्मित करती है। कोई तपस्या कर सके या नहीं कर सके, लेकिन तपस्वियों से यह प्रेरणा ले सकता है कि वह कभी भोजन में कभी जूटन नहीं छोड़ें। किसी के यहां भोजन करने जाएं तो कोई कमी नहीं निकालें। सदैव शाकाहार ग्रहण करें। कोई तकलीफ में हो तो उसकी मदद करें। ऐसी छोटी-छोटी बातों का विवेक रखकर तपस्या और तपस्वी की अनुमोदना करें।

भारतीय पंचांग में अनेक तिथियों का क्षय होता है, परंतु यह तप और दान का अतिशय प्रभाव ही है कि वैशाख सुदी तीज का कभी क्षय नहीं होता है। तप और दान के प्रभाव से समय का प्रवाह भी अनुशासित हो जाता है। यही नहीं, इस तिथि (आखा तीज) को बिना मुहूर्त हर शुभ कार्य किया जा सकता है।

इसी दिन 72 साल पहले श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ की स्थापना सादड़ी मारवाड़ (राजस्थान) में हुई थी। आत्माराम जी महाराज को श्रमण संघ का प्रथम आचार्य बनाया गया था। श्रमण संघ के निर्माण में अनेक मुनियों, साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का योगदान रहा था। अनेक संतों ने अपने पदों का त्याग कर दिया था। जहां पद नहीं मिलने संत भी रुठ जाते हैं, नई संप्रदाय खड़ी कर देते हैं, वहां पद का त्याग करके अनेक संप्रदायों के विलीनीकरण द्वारा श्रमण संघ का निर्माण एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना थी। श्रमण संघ के निर्माण में सहयोग करने वालों में मरुधर-केसरी मुनि श्री मिश्रीमलजी और आचार्य हस्तीमलजी महाराज का भी योगदान रहा था। इन दोनों संतों का संबंध भी आखा तीज से जुड़ा है। 10 मई, शुक्रवार को मरुधर केसरी की 106वीं दीक्षा जयंती है, वहीं आचार्य हस्ती का 95वां आचार्य पदारोहण दिवस भी है।

मरुधर केसरी के जीवन में आखा तीज का विशेष महत्व रहा। वैराग्य अवस्था में उन्होंने अक्षय तृतीया के दिन ही पहली बार गुरु के साथ पाली से विहार किया था। आखा तीज के दिन ही वि. सं. 2024 (मई 1967) में तत्कालीन उपराष्ट्रपति वि.वि. गिरी तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने सोजत में मरुधर केसरी को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया था। स्थानकवासी जैन परंपरा में आखा तीज के पारणोत्सव की शुरुआत करवाने का श्रेय मरुधर केसरी को ही जाता है। वस्तुतः भारतीय धर्म, समाज, संस्कृति और लोक परंपराओं में आखा तीज का बहुत महत्व है। यह पर्व तपस्या, सुपात्र दान और परस्पर सहयोग से जीवन को अक्षय बनाने की सीख देता है।

पीएनबी का मुनाफा 3010 करोड़ पर पहुंचा

बेंगलूरु/नई दिल्ली/दक्षिण भारत। सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख बैंक पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने वित्त वर्ष 2023-24 की मार्च 2024 को समाप्त अंतिम तिमाही में 3010 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो मार्च 2023 को समाप्त तिमाही के 1159 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 160 प्रतिशत अधिक है। बैंक के प्रबंध निदेशक (एमडी) एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अतुल कुमार गोयल ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद गुरुवार को यहां वर्चुअल संवाददाता सम्मेलन में वित्तीय लेखाजोखा पेश करते हुए कहा कि इस वर्ष मार्च में समाप्त तिमाही में बैंक की शुद्ध ब्याज आय 10363 करोड़ रुपये रही है जो वित्त वर्ष 2022-23 की समान अवधि के 9499 करोड़ रुपये की तुलना में 9.19प्रतिशत अधिक है। उन्होंने बताया कि इस तिमाही में बैंक की कुल आय 32361 करोड़ रुपये रही है जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की आय की तुलना में 18.7 प्रतिशत अधिक है।

गोयल ने कहा कि मार्च 2024 में समाप्त वित्त वर्ष में बैंक का शुद्ध लाभ 8245 करोड़ रुपये रहा है जो इससे पिछले वित्त वर्ष के 2507 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 229 प्रतिशत अधिक है। इसी तरह से वित्त वर्ष 2023-24 में बैंक की शुद्ध ब्याज आय 40083 करोड़ रुपये रही है जो मार्च 2023में समाप्त वित्त वर्ष की 34492 करोड़ रुपये की शुद्ध ब्याज आय की तुलना में 16.2 प्रतिशत अधिक है।

पावरग्रिड POWERGRID

Power Grid Corporation of India Limited
SR-II, RHQ, Near RTO Driving Test Track, Singanayakanahalli, Yelahanka, Bangalore 64. **Phones: 080 2309 3725 / 2309 3727**

निविदा आमंत्रण सूचना (एनआईटी) (निविदा आईडी:24072)

पावरग्रिड, एक भारत सरकार का उद्यम, चेन्नई में पारगमन शिविर आवास की स्थापना के लिए सीलबंद बोलियाँ आमंत्रित करता है।

पावरग्रिड, एक भारत सरकार का उद्यम, चेन्नई में पारगमन शिविर आवास की स्थापना में दिलचस्पी रखने वाले ऐसे स्वामियों से सीलबंद बोलियाँ आमंत्रित करता है, जिनके आवासीय परिसर तक आसानी से पहुँचा जा सकता हो। उनका परिसर एक मंज़िला/डुप्लेक्स भवन हो सकता है या बहुमंज़िला अपार्टमेंट में 2 इकाइयां हो सकती हैं। बेहतर होगा कि दोनों इकाइयाँ एक ही मंज़िल पर स्थित हों और बढ़िया आवासीय इलाकों में स्थित हों, जैसे कि अशोक नगर, के.के. नगर, श्रीनगर कॉलोनी, सेंट थॉमस माउंट और अड्यार तथा इन इलाकों के 1 किमी के भीतर स्थित आसपास की जगहों पर। परिसर का उपयोग 3 वर्ष की अवधि के लिए किया जाएगा और यह अवधि परस्पर रुप से सहमत दरों, नियमों व शर्तों पर 2 वर्ष के लिए बढ़ाई जाएगी।

उस भवन में कम से कम 8 कमरे होने चाहिए जिनका इस्तेमाल बेडरुम, किचन, हॉल और डाइनिंग रुम के तौर पर पारगमन शिविर की ज़रुरत मुताबिक किया जाएगा। साथ ही, उस भवन में कम से कम दो चार-पहिया वाहनों की पार्किंग के लिए व्यवस्था होनी चाहिए।

बोली का संपूर्ण दस्तावेज़ www.powergridindia.com से डाउनलोड किया जा सकता है या ऊपर बताए गए पते पर व्यक्तिगत रुप से जाकर/पत्र द्वारा अनुरोध पर निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

प्रामाणिक स्वामी/प्रतिष्ठित रियल एस्टेट एजेंसियाँ (स्वामियों की ओर से) एकल चरण दो बोली प्रणाली में आवेदन कर सकती हैं। सीलबंद और विधिवत रुप से भरे गए ऑफर ऊपर बताए गए पते पर 27/05/2024 को दोपहर 3:00 बजे तक व्यक्तिगत रुप से/डाक/कूरियर द्वारा जमा किए जाने चाहिए। टेक्नो-कमर्शियल ऑफर उसी दिन दोपहर 3:30 बजे खोले जाएंगे।

Save Energy for the benefit of Self & Nation

राजस्थान का टिकाऊ और दीर्घकालीन विकास बने प्राथमिकता : राज्यपाल मिश्र

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि राज्य के संतुलित और सतत विकास के लिए सभी मिलकर कार्य करें और राज्य का टिकाऊ और दीर्घकालीन विकास प्राथमिकता होनी चाहिए। मिश्र गुरुवार को राजभवन में राज्यपाल सलाहकार मण्डल की बैठक में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सर्वांगीण विकास के तहत आदिवासी कल्याण, शिक्षा, कृषि, पर्यटन, उद्योग आदि क्षेत्रों में सुनियोजित योजनाओं के जरिए दीर्घकालीन विकास को ध्यान में रखते हुए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सबिलिटी (सीएसआर) के तहत राज्य के विकास से जुड़े प्रभावी कार्य हाथ में लेकर उनके क्रियान्वयन की भी आवश्यकता जताई।

उन्होंने कहा कि राज्यपाल सलाहकार मंडल के अंतर्गत विषय विशेषज्ञों के सुझाव आमंत्रित कर उनके आधार पर प्रदेश के सतत, स्थायी और चहुंमुखी विकास के लिए कार्य किए जाने की पहल की गई है। विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व की बैठकों में आए सुझावों के विश्वविद्यालयी शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में लागू करने से सकारात्मक परिणाम भी आए हैं। उन्होंने बैठक में राजस्थान में उपलब्ध संसाधनों का समुचित दोहन कर प्रदेश के युगानुकुल विकास के लिए कार्य किए जाने, उद्यमिता विकास के लिए प्रयास बढ़ाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि राजभवन स्तर पर राज्यपाल राहत कोष के पुनर्गठन, जनजातीय क्षेत्रों के प्रभावी विकास, आदिवासी क्षेत्रों के टिकाऊ विकास से जुड़े मुद्दों की मॉनिटरिंग के लिए राजभवन स्तर पर जनजातीय एकक की स्थापना की गई है। राजभवन में देश का पहला संविधान उद्यान निर्मित किया गया है।

राज्य सलाहकार समिति के सदस्यों ने बैठक में वनस्थली विद्यापीठ की तर्ज पर आदिवासी क्षेत्र में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना किए जाने का भी विशेष रूप से सुझाव दिया। स्वास्थ्य क्षेत्र के अंतर्गत पब्लिक हेल्थ कैडर बनाने और शिशु और मातृ मृत्यु दर कम करने के लिए व्यावहारिक प्रयास किए जाने, सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई के इस्तेमाल और आयुष्मान भारत के समेकित क्रियान्वयन पर जोर दिया गया। इसी तरह आदिवासी क्षेत्रों में ग्राम न्यायालयों की अधिकाधिक स्थापना, राजस्व मामलों में त्वरित न्याय पद्धति के विकास और ट्राइबल क्षेत्रों के लिए हाईकोर्ट बेंच स्थापित किए जाने का राजभवन स्तर पर प्रस्ताव भिजवाए जाने का भी सुझाव आया। उच्च और तकनीकी शिक्षा के अंतर्गत प्रशिक्षित मानव संसाधन के लिए उद्योग-एकेडमिया लिंक स्थापित करने, वित्तीय साक्षरता पर कार्य करने और रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम विकसित करते हुए पूरी तरह से ई गवर्नेंस लागू करने के महती सुझाव दिए गए।

राज्य सलाहकार मंडल ने राज्य के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए समन्वित प्रयास किए जाने, राजस्थान से बाहर के राज्यों के लघु और मध्यम, सूक्ष्म लघु उद्योगों की राज्य में स्थापना, उद्यमिता को केंद्र में रखकर कार्य करने और उद्यमिता प्रोत्साहन के लिए विभिन्न स्तरों पर कदम उठाए जाने पर भी जोर दिया। बैठक में टीएमआई समूह के चेयरमैन टी. मुरलीधरन, एचआरएच ग्रुप के निदेशक लक्ष्यराज सिंह मेवाड़,वरिष्ठ अधिवक्ता आर. एन. माथुर, अर्थशास्त्री डॉ. मनोरंजन शर्मा, शिक्षाविद प्रो. एके गहलोत और डा. विश्वपति त्रिवेदी ने विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए अपने सुझाव दिए। राज्यपाल सलाहकार मंडल के सदस्यों ने राजभवन द्वारा नई शिक्षा नीति के आलोक में शैक्षिक गुणवत्ता के लिए किए गए कार्यों और राज्यपाल स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं मॉनिटरिंग कर विकास के लिए प्रभावी वातावरण निर्माण के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की। राजभवन में देश के पहले संविधान पार्क की स्थापना की पहल को भी महत्वपूर्ण बताया गया।

भजनलाल सरकार का बड़ा फैसला

महात्मा गांधी नरेगा में लगे संविदाकर्मी होंगे स्थायी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राज्य सरकार ने महात्मा गांधी नरेगा में लगे संविदाकर्मियों को स्थायी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसका लाभ उन्हीं कार्मिकों को मिलेगा जो अपनी सेवा के 9 साल या इससे अधिक की अवधि पूरी कर चुके हैं। अन्य विभाग या योजना की सेवा अवधि को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।

राज्य के ग्रामीण विभाग एवं पंचायती राज विभाग ने इस संबंध में राज्य के सभी जिला कार्यक्रम समन्वयक, ईजीएस एवं कलेक्टरों को निर्देश जारी किए हैं। इसमें कहा गया है कि 11 जनवरी 2022 द्वारा जारी राजस्थान कांट्रेक्चयुअल टू सिविल पोस्ट रूल 2022 के नियम-20 के तहत ग्रामीण विकास विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में सृजित 4966 नियमित पदों की प्रशासनिक स्वीकृति 7 मार्च 2024 को जारी की गई है।

इन आदेशों के तहत महात्मा गांधी नरेगा योजना के अंतर्गत नियुक्ति प्राप्त संविदाकर्मी जो 9 वर्ष या उससे अधिक की अवधि में संतोषजनक कार्य पूर्ण कर चुके हैं, की स्क्रीनिंग की जानी है। जिला स्तरीय कमेटी द्वारा इनकी पात्रता की जांच एवं दस्तावेज सत्यापन का कार्य किया जाना है। 9 साल की अवधि की गणना 1 अप्रैल 2024 को आधार मानकर की जाएगी।

जयपुर में सिटी पैलेस के स्टाफ पर वेंकेटेश्वर मंदिर में कब्जा व महंत के परिवार को बंधक बनाने का आरोप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। जयपुर के सिटी पैलेस में वेंकेटेश्वर मंदिर में तोड़फोड़ करने व महंत के परिवार के साथ मारपीट व बंधक बनाने का आरोप लगाया है। यह आरोप जयपुर सिटी पैलेस के गार्ड व कर्मचारियों पर लगाया है। मंदिर परिसर में यह कार्रवाई गुरुवार सुबह की गई थी। मंदिर के महंत ने आरोप लगाया कि मंदिर परिसर में तोड़फोड़ करने से पहले परिवार को बंधक बना लिया।

इस दौरान मौके पर जलेब चौक थाने के पुलिसकर्मी भी मौजूद थे। महंत ने कहा कि संपत्ति विवाद है और मामला कोर्ट में विचाराधीन है। सिटी पैलेस की ओर से इन दावों को गलत बताया गया है। महंत वेणु गोपाल के मुताबिक वो और उनका परिवार सालों से मंदिर में पूजा अर्चना कर रहा है। यहां राज परिवार का कोई दखल नहीं है।

उधर, सिटी पैलेस का दावा है कि यह जगह हमारे पास ही थी। यहां किसी ने थड़ी बना ली थी। सप्ताहभर पहले हमारे फेवर में ऑर्डर भी आ गया है। थड़ी हटाने का आदेश दिया था। यहां पार्किंग हमारी है।

भीषण गर्मी से पानी के लिए मचा हाहाकार, महिलाओं ने एडीएम से की मुलाकात

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अलवर। अलवर शहर में आए दिन पानी की समस्या को लेकर कहीं ना कहीं प्रदर्शन होना आम बात हो गई। भीषण गर्मी में पानी की समस्या विकराल रूप लेती नजर आ रही है। इसी कड़ी में रति का कुआं और आटा वाली गली की महिलाएं एडीएम बीना महावर से मिली। उन्होंने कहा कि मोहल्ले में पहले तीन दिन में पानी आता था, वह भी अब बंद हो गया।

समस्या इतनी बढ़ गई की बेटियों को छुट्टियों में घर तक नहीं बुला पा रहे और पूजा पाठ करने तक में दिक्कत आ रही है। अधिकांश समय तो पानी का इंतजाम करने में ही निकल जाता है। महिला पुष्पा शर्मा ने बताया बेटा आंध्र प्रदेश गया है। घर में पानी लाने वाला कोई नहीं सुबह पानी लाने के लिए बाहर निकली तो बाल्टी के साथ रास्ते में गिर गई, जिससे उन्हें चोटें आई।

वहीं महिला रजनी ने बताया कि लोगों ने अवैध कनेक्शन ले रखे है, जिसके कारण पानी की समस्या आ रही है। क्षेत्र में खारा पानी आता है, अगर मीठा पानी नहीं तो खारा पानी ही पहुंचवा दें, कम से कम कपड़े तो धो लेंगे।

इस पर एडीएम शहर बीना महावर ने जलदाय विभाग के एसई से बात कर समाधान का आश्वासन दिया। हालांकि जलदाय विभाग की ओर से पानी की समस्या को लेकर कंट्रोल रूम बनाया गया, जिसमें प्रतिदिन 8 से 10 शिकायत आ रही है. लेकिन कितनी समस्याओं का समाधान हो रहा है। इसका कोई हिसाब नहीं।

ई-मित्र संचालक एक लाख रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने जयपुर जिले में एक ई-मित्र संचालक को कथित रूप से एक लाख रुपए की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार कर लिया। ब्यूरो के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। इसके अनुसार, ग्राम पंचायत लसाड़िया में ई-मित्र संचालक विश्राम गुर्जर (निजी व्यक्ति) को परिवादी से एक लाख रुपये की कथित रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है। ब्यूरो के महानिदेशक डा. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने एक बयान में बताया कि परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि उसके पिता की मृत्यु होने पर श्रमिक डायरी के आधार पर श्रम विभाग से क्लेम पास करवाने की एवज में आरोपी विश्राम गुर्जर द्वारा एक लाख रुपये रिश्वत राशि की मांग कर परेशान किया जा रहा है। शिकायत का सत्यापन करने के बाद बृहस्पतिवार को कार्रवाई करते हुए आरोपी विश्राम गुर्जर को परिवादी से एक लाख रुपये रिश्वत राशि लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है। आरोपी से पूछताछ तथा आगे कार्रवाई की जा रही है।

जैसलमेर में बिजली का करंट लगने से जवान की मौत

जैसलमेर। राजस्थान के जैसलमेर जिले में सैन्य छावनी में बिजली का झटका लगने से एक जवान की मौत हो गई। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, लांस हवलदार जगरूप सिंह (28) की पानी की मोटर से करंट लगने से मौत हो गई। हादसे के बाद अन्य जवान जगरूप सिंह को आर्मी हॉस्पिटल लेकर गए थे जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। जवाहर अस्पताल में पोस्टमार्टम के बाद जवान का शव सेना को सौंप दिया गया । उनके पार्थिव शरीर को उनके पैतृक शहर तरनतारन, पंजाब ले जाया जाएगा जहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। शहर कोतवाल सवाई सिंह ने बताया कि पंजाब के तरनतारन के रहने वाले जगरूप सिंह भारतीय सेना में लांस हवलदार के पद पर कार्यरत थे और जोधपुर रोड स्थित सैन्य छावनी में रहते थे।

पारिवारिक विवाद में युवक ने अपने पिता की हत्या कर आत्महत्या की

जयपुर। राजस्थान के पाली जिले में एक व्यक्ति ने पारिवारिक विवाद के चलते अपने पिता की हत्या कर दी और फिर अपने पांच वर्षीय बेटे के साथ कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पाली के पुलिस उपाधीक्षक रतनाराम देवासी ने बताया कि यह घटना बुधवार रात को कुलथाना गांव में हुई। प्रकाश पटेल (30) की अपने तलाक को लेकर पिता दुर्गाराम पटेल (65) से बहस हो गई।

डॉ सुधीर भंडारी ने राज्यपाल को सौंपा इस्तीफा

जयपुर। फर्जी एनओसी से ऑर्गन ट्रांसप्लांट के मामले में विवादों में आए राजस्थान यूनिवर्सिटी आफ हेल्थ साइंस के कुलपति डॉक्टर सुधीर भंडारी ने पर से इस्तीफा दे दिया है। वह दोपहर तकरीबन 12:30 बजे राज्यपाल कलराज मिश्र से मिलने राज भवन गए थे। उसके कुछ देर बाद ही वहां चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर का पहले से जाना जाता था, वह भी वहां पहुंच गए। इसके बाद डॉक्टर सुधीर भंडारी ने राज्यपाल कलराज मिश्र को मामले में अपना पक्ष रखते हुए इस्तीफे की पेशकश कर दी है।

राजस्थान में चिकित्सा तंत्र को पूरी तरह ऑनलाइन किया जाएगा : सिंह

जयपुर। राजस्थान एकीकृत स्वास्थ्य प्रबंधन प्रणाली लागू कर चिकित्सा तंत्र को पूरी तरह ऑनलाइन किया जाएगा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने बताया कि राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण और चिकित्सा तंत्र को पूरी तरह ऑनलाइन करने के लिए 'इन्टीग्रेटेड हैल्थ मैनेजमेंट सिस्टम 2.0' लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आमजन को सुगमतापूर्वक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से यह एक महत्वाकांक्षी एवं दूरदृषी परियोजना है। सिंह ने बुधवार को यहां उच्च स्तरीय बैठक में इस प्रणाली के विकास को लेकर समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यह एक अत्याधुनिक हेल्थ मैनेजमेंट सिस्टम होगा, जिससे राज्य के चिकित्सा तंत्र में सकारात्मक क्रांतिकारी बदलाव आएगा।

पीएम विद्यालयों को उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित करें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। शासन सचिव स्कूल शिक्षा कृष्ण कुणाल ने कहा कि आधारभूत संरचना को सुदृढ़ कर पीएम विद्यालयों को उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित करें। कुणाल गुरूवार को आरटीडीसी के होटल गणगौर में आयोजित तीन दिवसीय क्षमता संवर्द्धन कार्यशाला के शुभारम्भ सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि छात्रों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधीयों को बढ़ावा दिया जाए।

साथ ही विद्यालयों में नामांकन बढाने, कैरियर काउंसलिंग करवाने, स्वच्छता सुनिश्चित करने, छात्रों को आईसीटी लैब एवं स्मार्ट क्लास का अधिकाधिक लाभ देने तथा विद्यालयों में नवाचार के रूप में हर्बल गार्डन विकसित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि छात्रों को ऐसी व्यावसायिक शिक्षा दें जो भविष्य में उन्हें रोजगार से जोड सके।

प्रत्येक जिले में समावेशी शिक्षायुक्त एक - एक विद्यालय विकसित किया जाए जिसमें विशेष श्रेणी के छात्र भी अध्ययन कर सकें। कार्यशाला में सभी जिलों से दो-दो संदर्भ व्यक्ति शामिल थे।

चाहे भ्रष्टाचारी कितना भी बड़ा होगा, उसे बख्शा नहीं जाएगा : शेखावत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोधपुर । केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान में जल जीवन मिशन योजना में 900 करोड़ रुपए के घोटाले में सीबीआई द्वारा केस दर्ज करने पर पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार को घेरा। शेखावत ने कहा कि अब पूर्ववर्ती सरकार के पापों से पर्दा उठेगा। राज्य की जनता को प्यासा रखने वालों को कड़ी सजा मिलेगी। भ्रष्टाचारी चाहे कितना भी बड़ा होगा, उसे किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

अपनी प्रतिक्रिया में शेखावत ने कहा कि वर्ष 2019 में मोदी सरकार ने जल जीवन मिशन योजना शुरू की गई थी। वर्ष 2021 तक केंद्र द्वारा सारी स्कीमें पास कर दी गईं थीं। केंद्र सरकार ने राजस्थान को इस योजना में सर्वाधिक 27 हजार करोड़ की धनराशि दी, लेकिन पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार ने जानबूझकर योजना को अधर में लटकाए रखा। पूर्ववर्ती सरकार की विफलता का इससे बड़ा और उदाहरण क्या हो सकता है कि उसने डेढ़ साल में एक भी पैसा विड्रो नहीं किया। गहलोत सरकार ने तीन-तीन बार टेंडर किए और सवा चार साल में केवल छह हजार करोड़ खर्च किए, जिसमें भी 900 करोड़ रुपए का घोटाला किया।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार ने केवल इस दुर्भावना में जल जीवन मिशन में काम नहीं किया, क्योंकि उसे डर था कि अगर राज्य में 'हर घर में नल से जल' मिलने लगेगा तो इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिलेगा।

शेखावत ने कहा कि अगर पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार प्रदेश की जनता के प्यासे कंठों पर राजनीति नहीं करती तो देश के कई अन्य राज्यों की तरह ही राजस्थान भी हर घर नल से जल पहुंचाने में टॉप पर होता, लेकिन आज स्थिति यह है कि राज्य सूची में नीचे से दूसरे नंबर पर है। केंद्रीय मंत्री ने दो टूक कहा कि जिन्होंने पानी के पैसे में भ्रष्टाचार किया है, जनता को प्यासा रखने का पाप किया है, उन्हें न केवल सलाखों के पीछे पहुंचाया जाएगा, बल्कि उनसे पैसों की वसूली भी होगी।

उन्तीसवां अखिल भारतवर्षीय सामूहिक विवाह सम्मेलन आज

जयपुर। राजस्थान में उन्तीसवां अखिल भारतवर्षीय सामूहिक विवाह सम्मेलन शुक्रवार अक्षय तृतीय पर जयपुर में आयोजित किया जायेगा। आदि गौड ब्राह्मण समाज सामूहिक विवाह समिति के अध्यक्ष पंडित महेन्द्र कुमार शर्मा (टीलावत) ने बताया कि इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में जयपुर एवं आस पास के विभिन्न क्षेत्रों से 17 जोड़ों का विवाह संपूर्ण वैदिक रीति रिवाज से सम्पन्न कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि समिति इससे पहले 28 सामूहिक विवाह सम्मेलन करा चुकी हैं जिसमें 878 जोड़ों का विवाह कराये गये हैं।

श्रीकृष्ण बलराम मंदिर का पांच दिवसीय 12वां पाटोत्सव दस मई से होगा शुरु

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित प्रसिद्ध श्रीकृष्ण बलराम मंदिर का पांच दिवसीय 12वां पाटोत्सव दस मई से आयोजित किया जायेगा। मंदिर के अध्यक्ष अमितासन दास ने बताया कि 10 से 14 मई पांच दिन तक मंदिर का 12वां पाटोत्सव मनाया जाएगा जिसकी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई है। इस आयोजन को लेकर सभी भक्त और श्रद्धालु बहुत ही उत्साहित नजर आ रहे हैं और इस कारण जगतपुरा स्थित श्रीकृष्ण बलराम मंदिर में इन दिनों अध्यात्म की लहर दौड़ गई।

उन्होंने बताया कि इन पांच दिनों में मंदिर में कई विशेष आयोजन होंगे जिनमें भक्त महाभिषेक कीर्तन, पालकी, भजन संध्या आदि का श्रद्धालु आनंद ले सकेंगे। उन्होंने बताया कि 'पाटोत्सव' का अर्थ है भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठा का महोत्सव, कृष्ण बलराम मंदिर के पांच दिवसीय 'पाटोत्सव' के पहले दिन सुदर्शन पूजा, महा आरती और सुदर्शन हवन होगा। कार्यक्रम के दूसरे दिन 11 मई को जगतपुरा फ्लाई ओवर से मंदिर तक विशाल रथ यात्रा का आयोजन किया जायेगा, जिसमें पूरे जयपुर से हज़ारों भक्त भाग लेंगे और भगवान की भक्ति का आनंद लेंगे।

जोशी ने पित्रोदा के देशवासियों को लेकर दिए गए बयान की भर्त्सना की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी ने कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा के देशवासियों को लेकर दिए गए बयान की कड़ी भर्त्सना की हैं।

जोशी ने अपने बयान में गुरुवार को कहा कि इनका यह बयान अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर रंगभेद, नस्लभेद की मानसिकता के आधार पर किए गए अत्याचार को प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा कि भारत विश्व गुरु रहा है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में दूसरे देशों से तुलना कर भारत को आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने अनेकता में एकता भारत की ताकत बताते हुए कहा कि रंग रूप के आधार पर टिप्पणी करना शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि मोदी दुनिया में भारत की ख्याति बढ़ा रहे हैं जबकि कांग्रेस अपने बयानों से देशवासियों को अपमानित कर रही है।

जोशी ने आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस की विभाजनकारी नीति ने देश को कमजोर किया हैं। कांग्रेस ने देश की एकता और अखंडता को ठेस पहुंचाई, फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई। विभाजनकारी नीति कांग्रेस की सोच है और देश को धर्म, जाति और रंग के आधार पर बांटने की कोशिश की जा रही है।

राजस्व संबंधी राज्य स्तरीय निर्णय लेखन कार्यशाला 12 जून से अजमेर में

जयपुर। राज्य के राजस्व न्यायालयों में पारित होने वाले निर्णयों को त्रुटिरहित, गुणवत्तापूर्ण एवं विधिसम्मत ढंग से लिखने की प्रवृत्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अधीनस्थ राजस्व न्यायालयों के पीठासीन अधिकारियों की त्रिदिवसीय निर्णय लेखन कार्यशाला 12 से 14 जून तक अजमेर के राजस्व अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित होगी। राजस्व मंडल अध्यक्ष राजेश्वर सिंह ने बताया कि इस कार्यशाला में राज्य के प्रत्येक जिले से सभी राजस्व अपील प्राधिकारी, भू प्रबंध अधिकारी पदेन राजस्व अपील प्राधिकारियों के साथ ही हर जिले से जिला कलक्टर के स्तर से मनोनीत अतिरिक्त जिला कलक्टर, उपखण्ड अधिकारी एवं सहायक कलक्टर में से किसी एक राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी की सहभागिता अपेक्षित की गई है। इससे पूर्व भी राज्य के अतिरिक्त संभागीय आयुक्त, राजस्व अपील अधिकारी एवं भू प्रबंध अधिकारियों तथा अतिरिक्त जिला कलेक्टर स्तर के अधिकारियों की कार्यशालाएं अजमेर में आयोजित हो चुकी हैं।

सैम पित्रोदा के बयान पर बोले योगी : रंग और चमड़ी के आधार पर देश को बांटने का प्रयास कर रही कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा के ताजा बयान को भारत को रंग और चमड़ी के आधार पर बांटने का प्रयास करार देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि इससे 140 करोड़ भारतवासियों का अपमान हुआ है और कांग्रेस को इसके लिये माफी मांगनी चाहिये।

मुख्यमंत्री ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में पित्रोदा के बयान को लेकर कांग्रेस की तीखी आलोचना की। उन्होंने कहा, ''सैम पित्रोदा कांग्रेस के बुद्धिदाता हैं। वह कांग्रेस की बांटो और राज करो की नीति को बयान कर रहे हैं। कांग्रेस में सत्ता प्राप्ति की अतिलिप्सा है। पित्रोदा का बयान अत्यंत निंदनीय है। कांग्रेस सैम पित्रोदा के मुंह से जो बोलवा रही है, उसके लिए उसे देश की जनता से माफी मांगनी चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''कांग्रेस के लोग भारत को रंग एवं चमड़ी के आधार पर बांटने का प्रयास कर रहे हैं। यह देश के प्रति साजिश का पर्दाफाश होने के साथ ही कांग्रेस की बहुत खतरनाक मंशा भी है। यह शर्मनाक और

निंदनीय बयान भारत जैसे सनातन देश में 140 करोड़ भारतवासियों को अपमानित करने वाला है।''

राम मंदिर से जुड़े सैम पित्रोदा के बयान पर मुख्यमंत्री ने कहा ,'' सैम पित्रोदा अपनी बुद्धि अपने पास ही रखें। उनके जैसे बुद्धिमान लोग कांग्रेस को मुबारक हों। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम भारत राष्ट्र के सांस्कृतिक एकता के आधार हैं।''

पित्रोदा ने एक पॉडकास्ट में कहा था, ''हम भारत जैसे विविधतापूर्ण देश को एक साथ रख सकते हैं, जहां पूरब में लोग चीनी जैसे दिखते हैं, पश्चिम में लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर में लोग शायद गोरे जैसे दिखते हैं और दक्षिण में लोग अफ़्रीकी जैसे दिखते हैं। उन्होंने कहा था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम सभी भाई-बहन हैं। हम अलग-अलग भाषाओं, अलग-अलग धर्मों, अलग-अलग रीति-रिवाजों, अलग-अलग खान-पान का सम्मान करते हैं। इससे पहले कुछ खबरों में पित्रोदा के हवाले से कहा गया था कि उन्हें यह बात परेशान करती है कि पूरा देश राम मंदिर पर अटका हुआ है। विवादित बयानबाजी को लेकर घिरे पित्रोदा ने बुधवार को इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से बुधवार को इस्तीफा दे दिया।

पित्रोदा की टिप्पणी को लेकर भाजपा ने दिल्ली में कांग्रेस कार्यालय के पास विरोध प्रदर्शन किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने बृहस्पतिवार को यहां अकबर रोड स्थित कांग्रेस मुख्यालय के पास विरोध प्रदर्शन किया और सैम पित्रोदा की विवादास्पद टिप्पणी पर राहुल गांधी सहित पार्टी के नेताओं से माफी की मांग की।

विरोध प्रदर्शन में भारतीय जनता पाटी (भाजपा) की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि विविधता भारत की सबसे बड़ी ताकत है और यह एकता की सामूहिक भावना से बंधी हुई है। सचदेवा ने कहा, लेकिन कांग्रेस नेता का जातिवादी बयान हमारी एकता और अखंडता पर कुठाराघात करता है। पित्रोदा का यह बयान अनायास नहीं है। लोकसभा चुनाव के तीन चरणों के बाद अपने पैरों के नीचे से जमीन खिसकती देख कांग्रेस नेता अब जातिवादी टिप्पणियों का सहारा ले रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने देश के लोगों और विदेश में रहने वाले भारतीयों का अपमान करने के लिए पूर्व पार्टी प्रमुख राहुल गांधी सहित कांग्रेस नेताओं से माफी की मांग की। अपनी टिप्पणियों को लेकर उठे विवाद के बीच पित्रोदा ने बुधवार को 'इंडियन ओवरसीज कांग्रेस' के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। पित्रोदा ने सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित एक साक्षात्कार में कहा, ''हम भारत जैसे विविधता से भरे देश को एकजुट रख सकते हैं। जहां पूर्व के लोग चीनी जैसे लगते हैं, पश्चिम के लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर के लोग गोरों और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी जैसे लगते हैं।''

राहुल गांधी के सिपहसालार ने भारत को रंग के आधार पर बांटने की बात की : नड्डा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चित्रकूट/फतेहपुर (उप्र)/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा की हाल की एक टिप्पणी की कड़ी आलोचना करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के एक सलाहकार ने भारत को रंग के आधार पर बांटने की बात की है। नड्डा ने यहां एक चुनावी रैली को सम्बोधित करते हुए कहा, ''राहुल गांधी के एक सिपहसालार और सलाहकार ने भारत को त्वचा के आधार पर विभाजित करने की बात की है। ऐसे लोग भारत की संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।''

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी बुधवार को त्वचा के रंग संबंधी सैम पित्रोदा की टिप्पणियों को लेकर कांग्रेस पर हमला किया था और कहा था कि देशवासी त्वचा के रंग के आधार पर अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। मोदी ने कहा था कि उन्हें अब समझ आ गया है कि कांग्रेस राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति मुर्मू को हराना चाहती थी क्योंकि उनकी 'त्वचा का रंग गहरा है।' 'ओवरसीज कांग्रेस' के अध्यक्ष रहे पित्रोदा ने टिप्पणी थी कि देश के पूर्वी हिस्सों के लोग चीनियों जैसे दिखते हैं, जबकि दक्षिण के लोग अफ्रीकियों जैसे दिखते हैं। उनकी इस टिप्पणी पर विवाद खड़ा हो गया है। नड्डा ने राहुल पर हमला बोलते हुए कहा, ''राहुल गांधी इन दिनों संविधान की कॉपी लेकर घूम रहे हैं। सच्चाई यह है कि कांग्रेस हमारे दलित, आदिवासी, पिछड़े और अतिपिछड़े भाइयों का हक छीनकर धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहती है।''

पलायन, अराजकता, बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का दंश झेल रहा है झारखंड : सीतारमण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रांची/भाषा। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि झारखंड बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, पलायन और अराजकता का खामियाजा भुगत रहा है और राज्य के शासन में बदलाव समय की जरूरत है। सीतारमण ने यहां एक कार्यक्रम में कहा कि झारखंड के प्रति सौतेला व्यवहार किए जाने के आरोप निराधार हैं। उन्होंने कहा, (आदिवासी प्रतीक) बिरसा मुंडा की प्रकृति से भरपूर यह भूमि अब बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का शिकार हो गई है... यह पलायन और अराजकता का दंश भी झेल रही है। और यहां उद्योगों के लिए अनुकूल माहौल नहीं है।

सीतारमण ने कहा कि उद्योगों की बहाली के जरिए पूर्वी भारत देश के विकास का इंजन बन सकता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि खनिजों के मूल्य संवर्धन पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि झारखंड में देश की 40 प्रतिशत खनिज संपदा है।

मंत्री ने कहा, ''कारोबार में सुगमता के मामले में झारखंड शीर्ष पांच राज्यों में शुमार

हुआ करता था लेकिन अब यहां 'जंगल राज' है। यदि कानून व्यवस्था में सुधार होता है तो राज्य में निवेश बढ़ेगा...झारखंड के शासन में बदलाव समय की मांग है।'' उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री द्वारा राज्य के साथ सौतेला व्यवहार किए जाने के (विपक्ष के) आरोप निराधार हैं... झारखंड को 2024-25 के बजट में रेल परियोजनाओं के लिए रिकॉर्ड 7,200 करोड़ रुपये आवंटित किए गए।''

'पूर्वी भारत – विकसित भारत के लिए विकास का इंजन' विषय पर परिसंवाद सत्र में सीतारमण ने कहा कि साहिबगंज, संथाल परगना और गोड्डा सहित राज्य के कुछ स्थानों पर घुसपैठ के कारण जनसांख्यिकीय परिवर्तन देखा जा रहा है।

ऑनलाइन जुआ में हारने पर व्यक्ति ने पत्नी, बेटी की हत्या करने के बाद खुदकुशी की

भुवनेश्वर/भाषा। ओडिशा के झारसुगुड़ा में बृहस्पतिवार सुबह एक कार से एक व्यक्ति, उसकी पत्नी और 12 वर्षीय बेटी के शव बरामद किये गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। झारसुगुड़ा के पुलिस अधीक्षक परमार स्मित परषोत्तमदास ने बताया कि मृतकों की पहचान सुजीत रे, उनकी पत्नी खुशबू और बेटी अर्पिता के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि जिले के लखनपुर पुलिस थाना क्षेत्र में बनीपाहदा के पास एक मैदान में खड़ी कार से उनके शव बरामद किए गए, जिन पर गोलियां लगने के घाव हैं। उन्होंने बताया कि शुरुआती जांच से पता चला है कि ऑनलाइन जुआ में लाखों रुपये हारने के बाद परेशान होकर सुजीत ने पहले अपनी पत्नी तथा बेटी को गोली मारी और फिर खुदकुशी कर ली।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि बुधवार रात करीब 10.30 बजे ओरिएंट पुलिस थाने में परिवार के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई गई थी। उनके मोबाइल फोन सिग्नल का इस्तेमाल करते हुए अधिकारियों ने उनका पता लगाया और कार के अंदर से शवों को बरामद किया गया। परषोत्तमदास ने बताया गाड़ी का इंजन और एयर कंडीशनिंग (एसी) चालू में था। उन्होंने बताया कि महिला और उसकी बेटी की आंखों पर कपड़ा बंधा हुआ था, जबकि सुजीत चालक की सीट पर था। उन्होंने बताया कि सुजीत के मोबाइल फोन की जांच करने पर पता चला कि वह विभिन्न ऑनलाइन मंच पर जुआ खेलता था। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि वह 4.25 लाख रुपये से अधिक एक ही ऐप पर गंवा चुका था और जुए की अपनी लत के चलते उसने कर्ज भी ले रखा था।

भाजपा के लोग इस कदर घबराये कि वे अपनों पर ही हमला करने लगे हैं : अखिलेश यादव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भाजपा के लोग इस कदर घबराये कि वे अपनों पर ही हमला करने लगे हैं : अखिलेश यादव

बहराइच/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अडाणीअम्बानी से जुड़ी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की टिप्पणी पर तंज करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि भाजपा के लोग आजकल इतने घबराये हुए हैं कि वे अपने ही लोगों पर हमला करने लगे हैं। उन्होंने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के राष्ट्रीय समन्वयक आकाश आनंद को पद से हटाये जाने की तरफ भी इशारा करते हुए कहा कि एक दल (भाजपा) अपनों पर हमला कर रहा है तो दूसरा अपनों को ही निकाल रहा है। उन्होंने दावा किया कि इन दोनों पार्टियों के बीच साठगांठ हैं।

यादव ने बहराइच में एक चुनावी जनसभा में अपने सम्बोधन में मोदी द्वारा बुधवार को अडाणीअम्बानी को लेकर की गयी एक टिप्पणी की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''चुनाव में आपको सावधान रहकर बहुत समझदारी से फैसला करना होगा क्योंकि भाजपा के लोग आजकल घबराए हुए हैं कि वे अपने ही लोगों पर हमला करने लगे हैं।'' उन्होंने कहा, ''प्रधान सांसद जी का कल का भाषण आपने सुना होगा। अभी तक तो हमें, आपको और सबको बुरा-भला कहते थे लेकिन आज अपने-अपनों पर ही हमला कर रहे हैं।''

मोदी ने बुधवार को हैदराबाद के वेमुलावाड़ा में एक चुनावी रैली में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा था, ''आपने देखा होगा कि कांग्रेस के शहजादे (राहुल गांधी की ओर इशारा करते हुए) पिछले पांच साल से सुबह उठते ही माला जपना शुरु करते थे। पांच साल से वह एक ही माला जपते थे। पांच उद्योगपति... फिर धीरे-धीरे कहने लगे... अंबानी, अडाणी... लेकिन जब से चुनाव घोषित हुआ है इन्होंने अंबानी अडाणी को गाली देना बंद कर दिया।'' उन्होंने कहा, ''जरा ये शहजादे घोषित करें कि इस चुनाव में अंबानी-अडाणी से कितना माल उठाया है? काले धन के कितने बोरे भर के रुपये मारे हैं? क्या टेम्पो भर के नोट कांग्रेस के लिए पहुंचे हैं? क्या सौदा हुआ है कि आपने रातों-रात अंबानी, अडाणी को गाली देना बंद कर दिया? जरूर दाल में कुछ काला है।''

छेड़छाड़ मामला : पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने दो मई की सीसीटीवी फुटेज आम लोगों को दिखाई

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी वी आनंद बोस पर राजभवन की एक महिला कर्मचारी की ओर से छेड़छाड़ का आरोप लगाये जाने के बाद राज्यपाल ने बृहस्पतिवार को आम लोगों को परिसर की दो मई की सीसीटीवी फुटेज दिखाई। राजभवन के ग्राउंड फ्लोर पर सेंट्रल मार्बल हॉल में कुछ लोगों को दो मई शाम करीब 5.30 बजे की मुख्य (उत्तरी) गेट पर लगे दो सीसीटीवी कैमरों की फुटेज दिखाई गई।

राजभवन की एक संविदा महिला कर्मचारी ने गत शुक्रवार को कोलकाता पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि बोस ने राज्यपाल आवास में उसके साथ छेड़छाड़ की थी। बोस ने बुधवार को कहा था कि वह ''राजनीतिक नेता'' ममता बनर्जी और उनकी पुलिस को छोड़कर आम लोगों को संबंधित सीसीटीवी फुटेज दिखाएंगे। एक घंटे से अधिक समय की फुटेज में, नीली जींस और टॉप पहने महिला को बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों के साथ पुलिस चौकी की ओर जाते देखा गया जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा के सिलसिले में राजभवन परिसर में तैनात थे। मोदी दो मई को राजभवन में रात में ठहरे थे और उन्होंने तीन मई को पश्चिम बंगाल में तीन राजनीतिक रैलियों को संबोधित किया था।

राजभवन के एक अधिकारी ने कहा, कम से कम 92 लोगों ने हमें मेल या फोन किया और सीसीटीवी फुटेज देखने की इच्छा व्यक्त की।

ताजा वीडियो में दावा : बलात्कार के झूठे मामले दर्ज कराने के लिये महिलाओं को छला गया

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल की बहुचर्चित संदेशखाली घटना के संबंध में एक कथित वीडियो में दावा किया गया है कि भारतीय जनता पार्टी की एक स्थानीय महिला नेता ने कई महिलाओं से सादे कागज पर हस्ताक्षर कराये और बाद में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस नेताओं के खिलाफ बलात्कार एवं यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज कराने में उसका इस्तेमाल किया गया। इन वीडियो को लेकर सत्तारूढ़ तृणमूल ने भाजपा पर झूठ फैलाने का आरोप लगाया है ।

इससे तीन दिन पहले तृणमूल कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर संदेशखालि 'स्टिंग ऑपरेशन' वीडियो को साझा किया, जिसमें एक स्थानीय भाजपा नेता गंगाधर कोयल ने दावा किया था कि बलात्कार के आरोप मनगढ़ंत थे और इस प्रकरण के पीछे पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी का हाथ है।

राम मंदिर पर 'बाबरी ताला' लगाने का आरोप 'सरासर झूठ' : प्रियंका

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रायबरेली (उप्र)/भाषा। कांग्रेस के सत्ता में आने पर अयोध्या के राम मंदिर में 'बाबरी ताला' लगा दिये जाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आरोप को 'सरासर झूठ' करार देते हुए पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनकी पार्टी कई बार कह चुकी है कि वह अदालत के फैसले का सम्मान करती है।

रायबरेली में अपने भाई एवं कांग्रेस प्रत्याशी राहुल गांधी के पक्ष में प्रचार कर रही प्रियंका ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में 'बाबरी ताले' को लेकर प्रधानमंत्री द्वारा लगाये गये आरोप के बारे में पूछे जाने पर कहा, ''यह सरासर झूठ है। कांग्रेस पार्टी ने कई बार कहा है कि वह (राम जन्म भूमिबाबरी मस्जिद मामले में) अदालत के

फैसले का सम्मान करेगी। हमने (अतीत में) ऐसा किया है और भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे।''

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को मध्य प्रदेश के धार में कहा था कि वह चाहते हैं कि भाजपा-नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) मौजूदा लोकसभा चुनाव में 400 सीट जीते, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कांग्रेस कश्मीर में अनुच्छेद 370 वापस न लाये और अयोध्या में राममंदिर पर 'बाबरी ताला' न लगाये। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी बुधवार को उत्तर प्रदेश में अपनी रैलियों में 'बाबरी' ताले की बात कही थी।

भारतीय महिला टीम 21 रन से जीती, टी20 शृंखला में 5-0 से क्लीन स्वीप किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

सिलहट (बांग्लादेश)/भाषा। रिचा घोष की नाबाद 28 रन की तेजतर्रार पारी के बाद राधा यादव (24 रन देकर तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी से भारत ने बृहस्पतिवार को यहां बांग्लादेश के खिलाफ पांचवें और अंतिम महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में 21 रन से जीत हासिल कर शृंखला में 5-0 से क्लीन स्वीप किया।

बांग्लादेश ने 157 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए अच्छी शुरूआत की लेकिन बायें हाथ की स्पिनर राधा यादव के शीर्ष क्रम को झकझोरने से उसकी टीम 20 ओवर में छह विकेट पर 136 रन ही बना सकी। उसके लिए रितु मोनी की 37 रन और शोरिफा खातून की नाबाद 28 रन

की पारी भी कुछ काम नहीं आ सकी। आल राउंडर मोनी और शोरिफा ने छठे विकेट के लिए 57 रन की साझेदारी निभाकर भारत को दबाव में ला दिया लेकिन मेहमान टीम ने अंत में शृंखला में सूपड़ा साफ किया। मोनी-शोरिफा के बीच यह साझेदारी बांग्लादेश के लिए महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय में छठे विकेट की सबसे बड़ी साझेदारी है। इससे पहले छठे विकेट के लिए संजीदा और निगार के बीच 32 रन की बड़ी साझेदारी थी। लेग स्पिनर आशा शोभना (25 रन देकर दो विकेट) ने यह भागीदारी तोड़ी। उन्होंने मोनी को 17वें ओवर में आउट कर घरेलू टीम की उम्मीद तोड़ दी। बांग्लादेश ने 10 ओवर में पांच विकेट गंवाकर 52 रन बना लिये थे लेकिन मोनी और शोरिफा ने मिलकर हर मौके का फायदा उठाकर बाउंड्री लगाकर और स्ट्राइक रोटेट करते हुए उम्मीद बंधाई।

राहुल की कप्तानी की आलोचना लेकिन अंतिम दो मैच में टीम की अगुआई करने की संभावना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ बुधवार को करारी हार के बाद आईपीएल प्ले ऑफ की दौड़ से लगभग बाहर होने से लखनऊ सुपरजाइंट्स के कप्तान के रूप में लोकेश राहुल के भविष्य को लेकर बहस तेज हो गई है।

अटकलें लगाई जा रहीं थी कि कप्तान स्वयं अपना पद छोड़कर बाकी बचे दो मैचों में अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान दे सकते हैं। हालांकि सिर्फ दो मैच बचे होने के कारण राहुल के टीम की अगुआई करते रहने की उम्मीद है। आईपीएल के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने

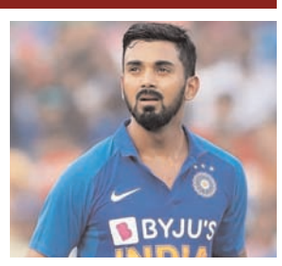

की शर्त पर पीटीआई को बताया, ''दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अगले मैच से पहले पांच दिन का ब्रेक है। फिलहाल कोई फैसला नहीं किया गया है लेकिन समझा जा रहा है कि अगर राहुल बाकी बचे दो मैच में सिर्फ अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान केंद्रित करने की योजना बनाते हैं तो प्रबंधन को कोई दिक्कत नहीं होगी।''

भारत में खेलना मेरे लिए अच्छा रहेगा, लेकिन वहां कई समारोह भी होंगे : नीरज चोपड़ा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

दोहा/भाषा। अभ्यास के कारण अधिकतर विदेश में रहने वाले ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने गुरुवार को स्वीकार किया कि उनकी स्टार खिलाड़ी की छवि भारत में उनके अभ्यास और प्रतिस्पर्धा में रोड़ा बन जाती है। मौजूदा विश्व और एशियाई खेलों के चैंपियन 26 वर्षीय चोपड़ा शुक्रवार को यहां डायमंड लीग के पहले चरण में हिस्सा लेंगे।

चोपड़ा ने प्रतियोगिता से पहले संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''मेरे लिए मेरा खेल सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। अगर मैं भारत में खेलता हूं तो यह मेरे प्रोफाइल के लिए अच्छा होगा लेकिन वहां कई समारोह और विवाह समारोह भी हैं। इसके अलावा मैं अपने परिवार और दोस्तों से भी मिलना चाहता हूं, लेकिन यह ओलंपिक वर्ष है और मेरे लिए अभ्यास करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।'' उन्होंने कहा,'' तोक्यो ओलंपिक से पहले मैं भारत में ही अभ्यास करता था लेकिन अभी मैं केवल अपने खेल पर ध्यान देना चाहता हूं। मैं बाद में भारत में अभ्यास करूंगा।'' चोपड़ा यहां से भारत जाएंगे जहां वह भुवनेश्वर में 12 से 15 मई के बीच होने वाले फेडरेशन कप में भाग लेंगे। पिछले तीन साल में यह पहला अवसर होगा जबकि वह भारत में

किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। वह जानते हैं कि भारत में उनका चेहरा जाना पहचाना है और उनकी उपस्थिति से किस तरह से देश में उनके खेल का महत्व बढ़ा। उन्होंने कहा,''यह विराट कोहली या महेंद्र सिंह धोनी जैसे क्रिकेटरों की तरह नहीं है लेकिन काफी लोग मुझे जानते हैं। मैं कभी-कभी भारत जाता हूं और लोग मुझे जानते हैं जो एथलेटिक्स के लिए अच्छा है। लोग एथलेटिक्स के बारे में जानते हैं और ओलंपिक स्वर्ण पदक के कारण एथलेटिक्स का अनुसरण करते हैं।'' चोपड़ा ने अभ्यास के लिए पिछले कुछ महीने दक्षिण अफ्रीका, तुर्की और स्विट्जरलैंड में बिताये। चोपड़ा से पूछा गया कि क्या उनकी योजना डायमंड लीग की प्रत्येक प्रतियोगिता में भाग लेने की है तो उन्होंने कहा कि इसका फैसला उनके कोच करेंगे।

सुविचार

अगर जिंदगी में कुछ भी सीखने को मिले तो कभी भी सीखना मत छोड़ना, क्योंकि जिंदगी हमेशा कुछ न कुछ सिखाती है और वह सिखाना कभी नहीं छोड़ती।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

दृढ़ता दिखाएं, भरोसा रखें

हाल में दिल्ली और अहमदाबाद के कई स्कूलों को 'बम से उड़ाने की धमकियां' मिलना अत्यंत गंभीर मामला है। इन स्कूलों को अलग-अलग समय पर मिलीं धमकियों में कई समानताएं भी थीं। सबको ईमेल भेजे गए, जिनमें यह दावा किया गया कि स्कूल परिसर में विस्फोटक लगाए गए हैं। इसके बाद स्कूल प्रबंधन ने पुलिस को सूचना दी और अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर तलाशी अभियान चलाया। किसी भी स्कूल में ऐसी कोई चीज नहीं मिली, जिससे सुरक्षा को खतरा हो। पुलिस ने पाया कि ये ईमेल फर्जी थे। हालांकि जब इतनी बड़ी संख्या में ईमेल मिले और उनमें बड़े स्तर पर वारदात को अंजाम देने की डींगें हांकी गईं तो उससे प्रतीत होता था कि ये कोरी धमकियां हैं। यह मानना होगा कि पुलिस ने इन सभी मामलों में बहुत फुर्ती दिखाई। अधिकारियों ने विद्यार्थियों और शिक्षकों के जीवन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ऐसा हर साधन आजमाया, जिससे सच्चाई सामने लाई जा सके। उन्होंने कुछ ही घंटों में खुलासा भी कर दिया कि ये ईमेल फर्जी थे। इनके पीछे देश या विदेश में बैठे खुराफाती या आतंकी तत्त्व हो सकते हैं, जिन्होंने अपनी पहचान छिपाकर लोगों में दहशत फैलाने के लिए स्कूलों को ईमेल भेजे थे। इन सभी मामलों पर गौर करें तो कुछ ऐसे बिंदु सामने आते हैं, जिनसे ईमेल भेजने वालों के इरादों का साफ पता चलता है। यह परंपरागत तरीके से किया गया 'आतंकी हमला' नहीं था, लेकिन 'निशाने' पर सभी लोग थे। जब किसी स्कूल को ईमेल मिला होगा तो उसके कर्मचारियों में हड़कंप मच गया होगा। उन्होंने आनन-फानन में पुलिस को सूचित किया होगा। उसके बाद मामला सोशल मीडिया पर आ गया। देखते ही देखते हर कहीं इसी बात की चर्चा होने लगी।

खुराफातियों/आतंकवादियों का एक पैसा खर्च नहीं हुआ, लेकिन वे दहशत फैलाने में कामयाब रहे। सोशल मीडिया ने उनको भरपूर प्रचार दिया। यही तो वे चाहते थे। जनता को डराना, आतंकित करना, सुरक्षा बलों और एजेंसियों को कमजोर दिखाना ... ये सब आतंकवादियों के षड्यंत्र का हिस्सा हैं। उन्हें प्रचार देने का मतलब है- उनकी ताकत बढ़ाना। उक्त ईमेल्स को भेजने के पीछे जो भी लोग हैं, जब उन्होंने सोशल मीडिया पर यह देखा होगा कि उनकी धमकियां ट्रेंड कर रही हैं, उनसे संबंधित पोस्ट खूब शेयर की जा रही हैं तो उन्होंने ठहाके लगाए होंगे कि एक ईमेल भेजा और भारत में सोशल मीडिया यूजर्स इतने 'व्यस्त' हो गए! वास्तव में ऐसे अपराधी इंटरनेट का इस्तेमाल हथियार के तौर पर करते हैं और जो लोग उनके 'निशाने' पर होते हैं, उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे 'शिकार' हो गए हैं। खुराफातियों/आतंकवादियों ने बहुत दूर/विदेश में बैठकर लोगों के 'दिमागों' से खेलने की कोशिश की। यह एक तरह का 'सूचना-युद्ध' है, जिसके उद्देश्यों को विफल करने के लिए हर राज्य की पुलिस को ठोस कदम उठाने होंगे। स्कूल संचालकों के साथ समय-समय पर बैठकें की जाएं और यह सुनिश्चित किया जाए कि धमकीभरे किसी भी पत्र/ईमेल/संदेश आदि की सूचना पुलिस को जरूर दें, लेकिन उसके बाद यह मामला सोशल मीडिया पर नहीं आना चाहिए। बच्चों को कक्षाओं से बाहर निकालें तो कोई ऐसा प्रयोजन बताएं, जिससे उनमें और अभिभावकों में भय न फैले। सोशल मीडिया पर नजर रखें और अफवाह फैलाने वाले अकाउंट्स पर कार्रवाई करें। एक निश्चित अवधि के बाद छोटी-सी सार्वजनिक सूचना दी जाए कि ऐसी धमकी मिली थी और वह फर्जी पाई गई। मामले को सनसनीखेज बनाने से बचा जाए। स्कूलों में सीसीटीवी कैमरे जरूर लगाए जाएं। समय-समय पर मॉक ड्रिल भी करवाई जाएं। देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ सुरक्षा बलों और जांच एजेंसियों की नहीं, बल्कि हर नागरिक की है। ऐसी धमकियों पर घबराहट भरी प्रतिक्रिया देने के बजाय दृढ़ता दिखाएं और अपने सुरक्षा बलों व जांच एजेंसियों पर भरोसा रखें।

ट्वीटर टॉक

आज तेलंगाना प्रदेश की वारंगल लोकसभा क्षेत्र के थोरूर हेलीपैड पर लोकसभा क्षेत्र प्रत्याशी श्री अरूरी रमेश जी, जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं द्वारा किए स्नेहपूर्ण स्वागत अभिनंदन हेतु सभी का हृदयतल से आभार।

-भजनलाल शर्मा

हैदराबाद के ऐतिहासिक स्मारक चारमीनार के निकट स्थित भाग्यलक्ष्मी मंदिर पहुंचकर आज देवी मां लक्ष्मी जी की पूजा - अर्चना कर देश में प्रचंड बहुमत से भाजपा की जीत के साथ केंद्र में मोदी सरकार बनने एवं देश व प्रदेश की खुशहाली और समृद्धि की प्रार्थना की।

-राजेन्द्र राठौड़

नए भारत की नेतृत्वशील नारी: संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक मंच पर राजस्थान की आवाज़ श्रीमती नीरू यादव के मुख से सुनाई दी। ग्राम पंचायत लांबी अहीर की नीरू जी को 'हॉकी वाली सरपंच' का उपनाम मिला है। उनकी समझ और कार्यशैली एक मिसाल है।

-गजेन्द्र सिंह शेखावत

प्रेरक प्रसंग

आस्था की दृष्टि

एक मिशनरी ने स्वामी रामकृष्ण से पूछा, 'वे माता काली के रोम-रोम में अनेक ब्रह्मांड होने की बात करते हैं और उस छोटी-सी मूर्ति को काली कहते हैं, यह कैसे?' इस पर परमहंस ने पूछा, 'सूरज दुनिया से कितना बड़ा है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नौ लाख गुना।' परमहंस ने फिर पूछा-'तब वह इतना छोटा कैसे दिखाई देता है?' मिशनरी ने कहा, 'नौ लाख गुना होने पर भी सूरज हमसे बहुत दूर है। इसलिए वह इतना छोटा दिखाई देता है।' परमहंस ने फिर पूछा, 'कितनी दूर?' उन्होंने बताया, 'नौ करोड़, तीस लाख मील।' परमहंस ने विनम्रता से जवाब दिया, 'ठीक इसी प्रकार आप मां काली से इतनी दूर हैं कि आपको वे छोटी दिखाई देती हैं। मैं उनकी गोद में हूं। इसलिए मुझे वे बड़ी लगती हैं। आप स्थूलदृष्टि से पत्थर देखते हैं, मैं आस्था की दृष्टि से शक्तिपुंज देखता हूं।'

सामयिक

तप, शक्ति एवं मंगल का पर्व है अक्षय तृतीया

ललित गर्ग

मोबाइल : 9811051133

अक्षय तृतीया महापर्व का न केवल सनातन परम्परा में बल्कि जैन परम्परा में विशेष महत्व है। इसका लौकिक और लोकोत्तर- दोनों ही दृष्टियों में महत्व है। यह त्यौहार अध्यात्म, आरोग्य, मंगल एवं उपवास का विलक्षण संगम है। इस त्यौहार के साथ-साथ एक अबूझा मांगलिक एवं शुभ दिन भी है, जब बिना किसी मुहूर्त के विवाह एवं मांगलिक कार्य किये जा सकते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक एवं मांगलिक ढांचों में ढले अक्षय तृतीया पर्व में हिन्दू-जैन धर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं का अनूठा संगम है। रास्ते चाहे कितने ही भिन्न हों पर इस पर्व के प्रति सभी जाति, वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय और धर्मों का आदर-भाव अभिन्नता में एकता का प्रिय संदेश दे रहा है। युद्ध, हिंसा एवं महामारी के समय में संयम एवं तप की अक्षय परम्परा को जन-जन की जीवनशैली बनाने की जरूरत है। अक्षय तृतीया का पावन पवित्र त्यौहार निश्चित रूप से धर्माराधना, त्याग, तपस्या आदि से पोषित ऐसे अक्षय बीजों को बोने का दिन है जिनसे समयान्तर पर प्राप्त होने वाली फसल न सिर्फ सामाजिक उत्साह को शतगुणित करने वाली होगी वरन अध्यात्म की ऐसी अविरल धारा को गतिमान करने वाली भी होगी जिससे सम्पूर्ण मानवता सिर्फ कुछ वर्षों तक नहीं पीढ़ियों तक स्नात होती रहेगी।

अक्षय तृतीया के पवित्र दिन पर हम सब संकल्पित बनें कि जो कुछ प्राप्त है उसे अक्षुण्ण रखते हुए इस अक्षय भंडार को शतगुणित करते रहें। यह त्यौहार हमारे लिए एक सीख बने, प्रेरणा बने और हम अपने आपको सर्वोतमुखी समृद्धि की दिशा में निरंतर गतिमान कर सकें। अच्छे संस्कारों का ग्रहण और गहरापन हमारी संस्कृति बने, तभी अक्षय तृतीया पर्व की सार्थकता होगी।

अक्षय तृतीया इस वर्ष 10 मई, 2024 को है। यह दिन किसानों एवं कुंभकारों के लिए विशेष महत्व का दिन हैं। शिल्पकारों के लिए भी यह बहुत महत्व का दिन है। बैलों के लिए भी बड़े महत्व का दिन है। प्राचीन समय से यह परम्परा रही है कि आज के दिन राजा अपने देश के विशिष्ट किसानों को राज दरबार में आमंत्रित करता था और उन्हें अगले वर्ष बुवाई के लिए विशेष प्रकार के बीज उपहार में देता था। लोगों में यह धारणा प्रचलित थी कि उन बीजों की बुवाई करने वाले किसान के धान्य-कोष्ठक कभी खाली नहीं रहते। यह इसका लौकिक दृष्टिकोण है। लोकोत्तर दृष्टि से अक्षय तृतीया पर्व का संबंध जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के साथ जुड़ा हुआ है। तपस्या हमारी संस्कृति का मूल तत्व है, आधार तत्व है। हिन्दु धर्म में उपवास व्रत के रूप में प्रतिष्ठित है। विशिष्ट तिथियों, पर्वों, त्यौहारों पर विविध उद्देश्यों एवं कामनाओं की पूर्ति के लिये उपवास किये जाते हैं।

इस्लाम में नमाज, जकात, हज आदि बुनियादी धार्मिक कृत्यों में एक है रोजा। रोजा का अर्थ बताया गया- रुक जाना। कुरआने करीम-रोजा सब मुसलमानों का फर्ज है। रोजा उपवास का एक रूप है, जो चांद एवं तारों की साक्षी से खोला जाता है। इसी प्रकार साइबेरिया, अमरीकन- इंडियन कबीलों एवं युनाइटेड स्टेटस के उत्तरी-पश्चिमी इलाकों में भी किसी-न-किसी रूप में उपवास किये जाते हैं- ऐसा शोधार्थी मानते हैं। उनका विश्वास है, उपवास के समय ईश्वर सपनों के माध्यम से दैवीय शिक्षा देते हैं। पेरु में पादरी के समक्ष पापों को स्वीकारने के लिये उपवास जरूरी माना जाता है। जूडेइज्म में प्रायश्चित के दिन एवं अन्य अवसरों पर उपवास का विधान है। इन सब तथ्यों का निष्कर्ष है कि उपवास सभी धर्मों और सभी देशों में धार्मिक आस्था के साथ हुआ व्यापक उपक्रम है। कहा जाता है कि संसार की जितनी समस्याएं हैं तपस्या एवं उपवास से उनका समाधान संभव है। संभवतः इसीलिए लोग विशेष प्रकार की तपस्याएं करते हैं और तपस्या के द्वारा संसार की आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों संपदाओं को हासिल करने का प्रयास करते हैं।

अक्षय तृतीया तप, त्याग और संयम का प्रतीक पर्व है। इसका सम्बन्ध भगवान ऋषभदेव के युग और उनके कठोर तप से जुड़ा होने से वर्षीतप की परम्परा चली। यह ऋषभ की दीर्घ तपस्या के समापन का दिन है। अपने आदिदेव की स्मृति में जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में असंख्य श्रावक-श्राविकाएं वर्षीतप करते हैं। जिनकी तपस्या का पूर्णाहुति एवं नये वर्षीतप के संकल्प के लिये इस दिन देशभर में आचार्यों और मुनियों के सान्निध्य में अनेक आयोजन होते हैं। इसका मुख्य आयोजन हस्तिनापुर (जिला मेरठ- उत्तर प्रदेश) में श्री शांतिनाथ जैन मन्दिर में एवं प्राचीन नसियांजी, जो भगवान ऋषभ के पारणे का मूल स्थल पर आयोजित होता है, वहां पर देशभर से हजारों तपस्वी एकत्र होते हैं और अपनी तपस्या का पारणा करते हैं। सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा का नाम है ऋषभ। वे सम्राट से संन्यासी बने, उनके प्रति जनता में गहरा आदर भाव था। यही कारण रहा कि उनके प्रजाजनों को इस बात का ज्ञान नहीं था कि भगवान ऋषभदेव को भिक्षा में भोजन की भी आवश्यकता होगी।

भगवान ऋषभ प्रतिदिन शुद्ध आहार की गवेषणा एवं तलाश करते हुए घर-घर में घूमते, लेकिन अज्ञानता के सघन आवरण के कारण कोई भी उन्हें भोजन उपहृत नहीं करता। लोग उन्हें आदर के साथ हाथी, घोड़े, रथ, रत्नाभूषण, रत्न जड़ित पादुकाएं ग्रहण करने की प्रार्थना करते। उनका मत था कि वे अपने सृजनहार को अपने पास की सबसे बड़ी एवं कीमती वस्तु उपहृत करें। इस तरह बिना आहार के भगवान ऋषभ की तपस्या के बारह महीने पूरे हो गए। इस क्रम में आप पादविहार करते हुए हस्तिनापुर पधारते हैं। आपका प्रपौत्र श्रेयांस कुमार राजमहल के गवाक्ष में बैठा सड़क के दृश्य को देख रहा है। अचानक उसकी नजरें सड़क पर भिक्षा की गवेषणा में नंगे पैर घूमते अपने संसारपक्षीय परदादा भगवान ऋषभदेव पर पड़ती है। भगवान ने प्रपौत्र श्रेयांस के हाथों इक्षुरस का सुपात्र दान लेकर एक नई परम्परा की शुरुआत की। इन अप्रत्याशित क्षणों के साक्षी बनकर देवलोक से समागत देवतागण भी अहोदानं-अहोदानं की ध्वनि प्रकट करते हुए पांच प्रकार के द्रव्यों की वर्षा की। एक दृष्टि से धर्म क्षेत्र में नयी सोच के दर्शन कराने वाला दिन बन गया। यही सन्दर्भ तपस्या और साधना का शुभ मुहूर्त बन गया।

सनातन धर्म में इसी दिन शादियों के भी अबूझ एवं स्वयंसिद्ध मुहूर्त रहता है और थोक में शादियां होती है। अक्षय तृतीया को आखा तीज भी कहा जाता है। माना जाता है कि इस दिन जो भी कार्य किए जाते हैं वे पुरी तरह सफल होते हैं एवं शुभ कार्यों को अक्षय फल मिलता है। भविष्य पुराण एवं स्कंद पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम रूप में जन्म लिया था। जो दक्षिण भारत में बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मनाई जाती है।

साथ ही यह भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया के दिन अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। साथ ही अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदना अत्यंत शुभ माना जाता है तथा गृह प्रवेश, पदभार ग्रहण, वाहन खरीदना, भूमि पूजन आदि शुभ कार्य करना अत्यंत लाभदायक एवं फलदायी होते हैं। इतना ही नहीं अक्षय तृतीया के दिन ही वृंदावन के बांके बिहारी के चरण दर्शन एवं प्रमुख तीर्थ बद्रीनाथ के पट (द्वार) भी अक्षय तृतीया को ही खुलते हैं।

विशेष

अदम्य साहस, वीरता और शौर्य के प्रतीक भगवान परशुराम

बाल मुकुन्द ओझा

मोबाइल : 9414441218

लोक नायक भगवान परशुराम का जन्मोत्सव देशभर में शुक्रवार को हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया जायेगा। परशुराम अन्यायी राजतंत्र के विरुद्ध संघर्ष के योद्धा थे। इस अवसर पर शोभा यात्रा, हवन पूजन सहित धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन होगा। देशभर से मिली जानकारी के अनुसार शनिवार को समूचा देश भगवान परशुराम के जयकारे से गूंजेगा। ब्राह्मण जाति के कुल गुरु भगवान परशुराम की जयंती हिन्दू पंचांग के मुताबिक वैशाख माह की शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाई जाती है। इस वर्ष परशुराम जयंती 10 मई शुक्रवार को है। परशुराम जयंती मनाने की सभी तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। हिंदू मान्यता के अनुसार परशुराम जयंती पर शुभ मुहूर्त में भगवान परशुराम की साधना-अराधना करने से जीवन से जुड़े तमाम कष्ट दूर और मनोकामनाएं पूरी होती हैं। पंचांग के अनुसार, वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि 10 मई 2024 को सुबह 4:17 पर शुरू होगी और अगले दिन 11 मई 2024 को प्रात: 2:50 पर इसका समापन होगा। इस तिथि पर प्रदोष व्यापिनी में पूजा करनी चाहिए क्योंकि भगवान परशुराम का प्राकट्य काल प्रदोष काल है, इसलिए परशुराम जी की पूजा शाम को करें। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु के छठे अवतार माने जाने वाले भगवान परशुरामजी का जन्म पुर्नवसु नक्षत्र में रात्रि के प्रथम पहर में पुत्रेष्टि यज्ञ से हुआ था। ऐसा माना जाता है कि इस दिन दिये गए पुण्य का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता। मान्यता है कि इस दिन पूजा करने से साहस में वृद्धि होती है और भय से मुक्ति मिलती है। उनका जीवन हमें सदा सर्वदा अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध दृढ रहने, और संघर्ष करके विजय प्राप्त करने को प्रेरित करता है। परशुराम की गाथा अनीति, अन्याय, अत्याचार, छल-प्रपंच का संहार करने की सच्चाई वर्णित करती है जो आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। मान्यता है कि परशुराम का जन्म धरती पर राजाओं द्वारा किए जा रहे अधर्म, पाप का विनाश के लिए हुआ था। भगवान परशुराम का आदर्श चरित्र देश में आज भी प्रासंगिक है। भक्ति और शक्ति के प्रतीक परशुराम का चरित्र सत्ताधीशों को त्याग, जन कल्याण और उत्तम आचरण की शिक्षा देता है। वह शोषित पीड़ित जनमानस को उसकी शक्ति और सामर्थ्य का अहसास दिलाता है। शासकीय दमन के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद है। सर्वहारा वर्ग के लिए अपने न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने की प्रेरणा है। वह राजशक्ति पर लोकशक्ति का विजयघोष है। जनता पर अत्याचार रोकने के लिये उन्होंने हिंसा का सहारा लिया और 21 बार इसका प्रायश्चित कर जीती हुई सारी धरती दान कर स्वयं ही देश निकाला लेकर महेंद्र पर्वत पर चले गए। बताया जाता है भगवान परशुराम ने जनकल्याण के लिए अपने समय में नदियों की दिशा बदल दी थी। उन्होंने अपने बल से आर्यों के शत्रुओं का भी नाश किया था। भगवान परशुराम को भागवत पुराण में सोलहवां अवतार माना गया है। अपनी घोर तपस्या के बल पर अन्याय और अत्याचार का खात्मा करने में वे सफल रहे। उन्होंने अधर्मियों, अन्यायियों व अत्याचारियों के खिलाफ शस्त्र उठाए।जन कल्याण और उत्तम आचरण की शिक्षा देता है। वह शोषित पीड़ित जनमानस को उसकी शक्ति और सामर्थ्य का अहसास दिलाता है। शासकीय दमन के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद है। सर्वहारा वर्ग के लिए अपने न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने की प्रेरणा है। वह राजशक्ति पर लोकशक्ति का विजयघोष है। जनता पर अत्याचार रोकने के लिये उन्होंने हिंसा का सहारा लिया और 21 बार इसका प्रायश्चित कर जीती हुई सारी धरती दान कर स्वयं ही देश निकाला लेकर महेंद्र पर्वत पर चले गए। बताया जाता है भगवान परशुराम ने जनकल्याण के लिए अपने समय में नदियों की दिशा बदल दी थी। उन्होंने अपने बल से आर्यों के शत्रुओं का भी नाश किया था। भगवान परशुराम को भागवत पुराण में सोलहवां अवतार माना गया है। अपनी घोर तपस्या के बल पर अन्याय और अत्याचार का खात्मा करने में वे सफल रहे। उन्होंने अधर्मियों, अन्यायियों व अत्याचारियों के खिलाफ शस्त्र उठाए।

नजरिया

भीषण गर्मी में मतदान ही तो ताकत है भारतीय लोकतंत्र की

आर.के. सिन्हा

आज जब देश के बहुत बड़े भाग में सूरज देवता आग उगल रहे हैं, तब लोकसभा चुनाव के लिए जनता मतदान करने के लिए अपने घरों से निकल रही है। भारत के कई राज्यों में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर हो गया है। इसके साथ ही लू भी चल रही है। इतने कठोर मौसम में चुनाव प्रचार करना और फिर मतदान करने के लिए मतदान केन्द्रों के बाहर लंबी लाइन लगाकर खड़ा होना सामान्य बात तो नहीं मानी जा सकती है। इसलिए प्रचार भी सुबह या शाम को ही संभव हो पाता है। दोपहर के समय तो मात्र रणनीति ही बनाई जा सकती है। पर इतने खराब मौसम में भी देश के लाखों-करोड़ों मतदाता घरों से निकलकर वोट तो दे ही रहे हैं। यह सुखद भी है और यह हमारे मज़बूत लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत भी है। आखिर देश के जनमानस को पता है कि उनके वोट से ही देश की तकदीर लिखी जाएगी। इसलिए ही लोग वोट देकर अपने लोकतांत्रिक अधिकार का भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं। बेहतर होगा कि मतदाता सुबह जल्दी ही अपने मताधिकार का प्रयोग करके घर वापस आ जायें। उन्हें मतदान केन्द्रों में जाते वक्त अपने साथ पानी की बोतलें करोड़ रख लेनी चाहिएं। मुँह- सिर ढकने के लिये एक गमछा भी सही रहेगा ।

आप जानते हैं कि भारत में लोकसभा चुनाव आमतौर पर हर पाँच साल में अप्रैल और मई में होता है, और मतदाता और मतदान अधिकारी कठोर गर्मी से निपटने के आदी हैं। लेकिन, इस साल, भारत रिकॉर्ड तोड़ गर्मी का मुकाबला कर रहा है। पिछले महीने, देश में भीषण गर्मी के कारण कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई थी। चुनाव प्रचार के दौरान केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी पश्चिमी राज्य महाराष्ट्र में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए बेहोश हो गए थे, बाद में उन्होंने बताया कि भीड़ भरे स्थान और उच्च तापमान के कारण उन्हें असहज महसूस हुआ था। इससे कुछ दिन पहले, पूर्वी शहर कोलकाता में, जहाँ तापमान 43 सेल्सियस से ऊपर चला गया था, एक खबरिया चैनल की एंकर मौसम अपडेट प्रस्तुत करते समय बेहोश हो गई थी। बाद में उसने बताया कि स्टूडियो का कूलिंग सिस्टम खराब हो जाने के कारण बहुत गर्मी हो जाने के कारण ऐसा हुआ! चुनाव अधिकारी मतदान केंद्रों पर पेयजल की आपूर्ति करके और मतदान का समय बढ़ाकर इससे निपटने के लिए कदम तो उठा रहे हैं।

वर्ष 2019 के चुनाव की तुलना में, 19 अप्रैल और 26 अप्रैल को हुए मतदान के पहले दो चरणों में मतदाता मतदान में कम से कम 37 की गिरावट देखी गई। चुनाव आयोग को अगले चुनावों के पूर्व एकबार यह विचार करना होगा कि आम चुनावों की तिथियों को अप्रैल-मई की जगह फ़रवरी-मार्च में किया जा सकता है क्या? इससे पूरे देश में सुविधा होगी। कुछ पर्वतीय राज्यों में बर्फ जमा रहने के कारण दिक़्क़त तो हो सकती है, पर उन क्षेत्रों में एक महीने बाद चुनाव और उसके बाद चुनाव परिणामों की घोषणा तो की ही जा सकती है। यह तो सोचना ही होगा कि क्या देश में फरवरी और मार्च के ठंडे महीनों के बीच लोकसभा चुनाव कराने के बारे में विचार नहीं किया जा सकता है? इसके चलते अधिक लोगों को वोट देने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता है।

गर्मी में लंबे समय तक रहने से थकान, चक्कर आना और बेहोशी हो सकती है। इसलिए उम्मीदवारों, पार्टी कार्यकर्ताओं मतदाताओं को बहुत संभल कर चलना होगा। उन लोगों को भी अपनी सेहत का ध्यान देना होगा जो विभिन्न राजनीतिक दलों की सभाओं में नेताओं को सुनने के लिए जाते हैं। डॉक्टरों का कहना है कि हृदय रोग या उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों वाले मरीजों को भी गर्मी में अतिरिक्त रूप से सतर्क रहने की जरूरत है। मतदाताओं का कहना है कि वे गर्मी को लेकर आशंकित हैं लेकिन सावधानी बरतेंगे। दिल्ली और हरियाणा की क्रमश: 7 और दस सीटों के लिए मतदान आगामी 25 मई को होना है। आशंका है कि 25 मई को दिल्ली-हरियाणा में पारा 42 सेल्सियस के आसपास होगा। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम समेत एनसीआर के इलाकों में बीते कुछ दिनों से आसमान से आग बरस रही है। दिन में तापमान 40 पार कर जा रहा है और ऐसे में लोगों का गर्मी से जीना मुहाल हो गया है। आने वाले दिनों में दिल्ली-एनसीआर में गर्मी का कहर अभी और देखने को मिलेगा। तो बहुत साफ कि जब दिल्ली और हरियाणा के मतदाता अपने मतदान केन्द्र में जाएंगे तो उन्हें बेहद गर्म मौसम में घर से निकलना होगा। इसलिए अगर वे सुबह 11 बजे तक मतदान कर लें तो बेहतर होगा। उसके बाद गर्मी का असर भयावह होने लगेगा।फ बताया जा रहा है कि आने वाले में दिल्ली के कुछ इलाकों में 43 डिग्री तक तापमान पहुंचने की उम्मीद है। इतनी भीषण गर्मी में वोट देने के लिए घर से निकलने से पहले बुजुर्गों को अपना ख्याल रखना ही होगा।

इस बीच, पुणे महाराष्ट्र के सबसे गर्म क्षेत्रों में से एक है, जहाँ 13 और 20 मई को दो और चरणों में मतदान होगा। पिछले एक हफ्ते से पुणे में 39 सेल्सियस और 42 सेल्सियस के बीच तापमान चल रहा है और मौसम विभाग का कहना है कि आने वाले दिनों में इसके जारी रहने की संभावना है। तो गर्मी के प्रकोप का असर हर तरफ है। इस मौसम में अगर सावधानी न बरती जाए तो हीटस्ट्रोक हो सकता है या डिहाइड्रेशन हो सकता है। हरियाणा के पड़ोसी राज्य पंजाब की 13 लोकसभा सीटों के लिए मतदान 1 जून को होना है। पंजाब आजकल ही गर्मी से झुलस रहा। माना जा रहा है कि राज्य में मतदान वाले दिन तापमान 43 डिग्री सेल्सियस के करीब पहुंचेगा। आजकल लुधियाना व फाजिल्का सबसे गर्म चल रहे हैं। यहां का अधिकतम तापमान सबसे अधिक 42.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जोकि सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस अधिक था। कहना ना होगा कि इतनी तेज गर्मी में मतदान करने के लिए घर से निकलना कठिन तो है।

दक्षिणी राज्य तेलंगाना में 13 मई को चौथे चरण में मतदान करने वाला है। वहां भी चिलचिलाती गर्मी को जनता झेल रही है। इस तापमान में वोट डालने के लिए बाहर आना मुश्किल है। बुजुर्गों को मतदान केंद्रों तक ले जाना चुनौतीपूर्ण होने वाला है। इस साल पहली बार, देश में चुनावों की देखरेख करने वाले चुनाव आयोग ने 85 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों और विकलांग लोगों को अपने घरों से वोट डालने की अनुमति दी है। आयोग ने मार्च में चुनावों पर गर्मी के प्रभाव को कम करने के लिए दिशानिर्देश भी जारी किए। इसके साथ ही,मतदान केंद्रों पर पेयजल और ओरल हाइड्रेशन सॉल्ट उपलब्ध कराने, मेडिकल किट तैयार रखने और देरी को रोकने के लिए पर्याप्त मतदान कर्मचारी रखने के निर्देश दिये गये हैं। बहरहाल, आम भारतीय का यही कहना है कि गर्मी हमें वोट देने से नहीं रोक सकती। यही जज्बा भारत और भारत लोकतंत्र की ताकत है।

(लेखक पूर्व सांसद हैं)

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law. **Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

मारुति ने पेश की नई पीढ़ी की स्विफ्ट, हैचबैक खंड पर रहेगी खास नजर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नयी दिल्ली। की अग्रणी वाहन विनर्माता मारुति सुजुकी इंडिया ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह छोटी कारों के खंड को 'फिर से सक्रिय' करना जारी रखेगी क्योंकि अगले कुछ वर्षों में इसके दोबारा रफ्तार पकड़ने की उम्मीद है। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) हिसाशी ताकूची ने लोकप्रिय छोटी कार स्विफ्ट की नई पीढ़ी को पेश करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि मारुति का लक्ष्य ग्राहकों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करना है और वह वर्ष 2030-31 तक 40 लाख इकाइयां बेचने का लक्ष्य लेकर चल रही है। ताकूची ने कहा कि प्रवेश स्तर खंड यात्री कारों की बिक्री के लिहाज से उच्च मात्रा वाला बना हुआ है जिसमें लगभग 28 प्रतिशत कारों की बिक्री होती है।

ताकूची ने कहा, बाजार के अगुवा के तौर पर हमने उस समय हैचबैक खंड में फिर से नई जान फूंकने का जिम्मा उठाया जब इस खंड को असल में वृद्धि उत्प्रेरक की जरूरत है। हमें भारत की वृद्धि की गाथा पर पूरा भरोसा है। उन्होंने कहा, जापान जैसे विकसित देशों में प्रति 1000 आबादी पर 600 कारें हैं जबकि भारत में यह अनुपात केवल 32 वाहनों का है। इस तरह भारत में कार खरीदने की चाहत रखने वाले लोगों की बड़ी संख्या है। उन्होंने कहा कि कार स्वामित्व बढ़ने के साथ हैचबैक खंड कई ग्राहकों के लिए शुरुआती बिंदु का काम करेगा। इस संभावना को ध्यान में रखते हुए मारुति सुजुकी हैचबैक खंड पर अपना ध्यान बनाए रखेगी।

प्रदर्शनी

गुरुवार को हैदराबाद के बंजारा हिल्स में हिलिफ़ प्रदर्शनी की तारीख की घोषणा के दौरान अभिनेत्री और मॉडल।

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. ने शानदार वित्तीय प्रदर्शन किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/दक्षिण भारत। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान 16,015 करोड़ रुपए के रिकॉर्ड समेकित कर पश्चात लाभ (पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 6,980 करोड़ रुपए का समेकित शुद्ध घाटा) के साथ शानदार वित्तीय प्रदर्शन दर्ज किया है।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान स्टैंडअलोन पीएटी भी अब तक का सबसे अधिक 14,694 करोड़ रुपए (पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 8,974 करोड़ रुपए का स्टैंडअलोन शुद्ध घाटा) था। जनवरी-मार्च 2024 की अवधि के लिए स्टैंडअलोन पीएटी 2,843 करोड़ रुपए है, जो पिछली तिमाही अक्टूबर-दिसंबर 2023 के दौरान रिपोर्ट किए गए 529 करोड़ रुपए के पीएटी से 437 प्रतिशत ज्यादा है। जनवरी-मार्च 2023 के दौरान पीएटी 3,223 करोड़ रुपए था।

कंपनी ने जनवरी-मार्च 2024 तिमाही के लिए परिचालन से 1,21,532 करोड़ रुपए का राजस्व दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही के 1,14,445 करोड़ रुपए के परिचालन राजस्व से 6.2 प्रतिशत ज्यादा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए, परिचालन से राजस्व 4,61,638 करोड़ रुपए (पिछले वर्ष के दौरान 4,66,192 करोड़ रुपए) था।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए औसत जीआरएम (निर्यात शुल्क का सकल) 9.08 डॉलर प्रति बैरल (पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान डॉलर 12.09 प्रति बैरल) था। जीआरएम में कमी अंतरराष्ट्रीय प्रॉडक्ट क्रैक्स की प्रवृत्ति के अनुरूप है।

निदेशक मंडल ने 1:2 के अनुपात में बोनस शेयर जारी करने की सिफारिश की है, यानी कंपनी के सदस्यों की मंजूरी के अधीन, 10 रुपए के प्रत्येक पूर्ण भुगतान वाले दो मौजूदा इक्विटी शेयरों के लिए 10 रुपए का एक नया बोनस इक्विटी शेयर जारी किया जाएगा।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने नौ मई के दंगों पर माफी मांगने से किया इनकार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के, जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने पिछले साल नौ मई को हुए दंगों के लिए माफी मांगने से इनकार कर दिया है।

इससे एक दिन पहले सैन्य शासन ने उनकी पार्टी से तब तक बातचीत करने से इनकार कर दिया था जब तक खान इन दंगों के लिए सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांगते। डॉन अखबार में प्रकाशित खबर के मुताबिक, बुधवार को 19 करोड़ पाउंड के अल कादिर भ्रष्टाचार मामले में अदालत में पेश होने के बाद इमरान ने मीडियाकर्मियों से कहा कि वह 2014 में अपनी पाकिस्तान तहरीक-इंसाफ पार्टी (पीटीआई) द्वारा किए गए धरने की जांच का सामना करने के लिए भी तैयार हैं। खबर के अनुसार, जब उनसे पूछा गया कि क्या वह नौ मई को हुए हिंसक विरोध प्रदर्शन के लिए माफी मांगेंगे तो 71 वर्षीय इमरान ने कोई जवाब नहीं दिया।

उन्होंने हालांकि कहा कि वह उस समय हिरासत में थे और उन विरोध प्रदर्शनों से अनजान थे। पूव प्रधानमंत्री ने कहा, मैंने (पूर्व) प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल के सामने नौ मई को हुए दंगों की निंदा की थी। इमरान खान ने बताया कि उन्हें विरोध प्रदर्शनों के बारे में तब पता चला जब वह पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल के सामने पेश हुए थे।

खान पिछले साल अगस्त से जेल में बंद हैं। उनके खिलाफ भ्रष्टाचार से लेकर आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम का उल्लंघन करने समेत कई मामले दर्ज हैं। पीटीआई संस्थापक, इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस के महानिदेशक के मंगलवार को हुए संवाददाता सम्मेलन से संबंधित एक सवाल का जवाब दे रहे थे, जिसमें महानिदेशक ने नौ मई के हिंसक विरोध प्रदर्शन में शामिल लोगों से माफी मांगने और कोई भी बातचीत करने से पहले अराजकता की राजनीति बंद करने की मांग की थी।

स्वागत

रायबरेली में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा का गुरुवार को लोकसभा चुनाव के लिए एक चुनावी रैली के दौरान स्वागत किया गया।

दिव्या खोसला की फिल्म 'सावी' का नया टीजर रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड अभिनेत्री दिव्या खोसला की आने वाली फिल्म सावी का नया टीजर रिलीज हो गया है। अभिनय देव निर्देशित सावी- ए ब्लडी हाउसवाइफ फैंस के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। पिछले कुछ दिनों में, दर्शको ने दिव्या खोसला को फिल्म सावी में एक साधारण हाउसवाइफ के किरदार में देख रहे हैं, जिसमे उन्होंने खुलासा किया की वह एक खतरनाक जेलब्रेक करने की योजना बना रही है। हालांकि पहले बहुत अधिक डिटेल्स नहीं दिए गए थे , पर अब इस नए टीज़र में यह जानकारी शेयर की गयी है कि सावी इतना कठोर कदम क्यों उठा रही है। नये टीज़र में, सावी – एक घायल हाउस वाइफ यह बात करती हुई दिखाई देती है कि कैसे लोग अपने परिवार के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं और वह भी वैसा ही कर रही है। जेल से भागने में सफल होने को लेकर परेशान दिखाई देती है। फैंस भी यह देखते हुए नज़र आते हैं कि कैसे एक हेल्पलेस मां यदि उसे कुछ हो गया तो अपने बच्चो के देखभाल करने की गुहार लगाते हुए नज़र आती हैं। फिल्म सावी का निर्माण विशेष एंटरटेनमेंट और टी-सीरीज़ के बैनर तले मुकेश भट्ट, भूषण कुमार और कृष्ण कुमार द्वारा किया गया है। शिव चानना और साक्षी भट्ट ने को प्रोड्यूस किया है। इस फिल्म में दिव्या खोसला के साथ अनिल कपूर और हर्षवर्द्धन राणे भी नज़र आयेंगे। फिल्म की पूरी शूटिंग लंदन में की गई है।फिल्म सावी 31 मई, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

अक्षरा सिंह और मोनालिसा ने एयरब्रिज पर किया फोटोशूट

मुंबई/एजेन्सी

भोजपुरी एक्ट्रेस अक्षरा सिंह ने बुधवार को अपनी ट्रैवल पार्टनर मोनालिसा के साथ तस्वीरें शेयर की, जिसमें दोनों एयरब्रिज के अंदर खड़ी हुई नजर आ रही हैं। तस्वीरों में अक्षरा ब्राइट येलो शर्ट और रिप्ड जींस में नजर आ रही हैं। उन्होंने अपने बालों को खुला रखा और सनग्लासेस लगाए हुए हैं। अपने लुक को उन्होंने क्लियर हील्स के साथ पूरा किया। वहीं मोनालिसा ने व्हाइट टॉप के साथ ब्लू डेनिम जैकेट पहनी हुई है। उन्होंने नो-मेकअप लुक चुना और अपने बालों को पोनीटेल में बांधा। पोस्ट को कैप्शन देते हुए एक्ट्रेस ने लिखा, आज के मैंडेटरी जगह पर हमारा साथ देते हुए कोई और नहीं बल्कि मोनालिसा जी हैं।'' साथ ही उन्होंने हैशटैग ट्रैवल और 'ट्रेवल पार्टनर ऑफ द डे' को जोड़ा।

इसके साथ ही उन्होंने अपनी

पोस्ट में 'पटाखा गुड्डी' का म्यूजिक ऐड किया। पोस्ट के कमेंट सेक्शन में एक फैन ने लिखा, दो सुपरस्टार एक साथ। एक अन्य यूजर ने कहा, आप दोनों बहुत खूबसूरत लग रहे हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो अक्षरा को हाल ही में पंजाबी सिंगर मनकीरत औलख के साथ 'डिफेंडर' नामक म्यूजिक वीडियो में देखा गया था।

चारधाम यात्रा शुक्रवार को आरंभ, पहले दिन खुलेंगे केदारनाथ सहित तीन धामों के कपाट

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

देहरादून। उत्तराखंड के उच्च गढ़वाल क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धामों के कपाट शीतकाल के दौरान छह माह बंद रहने के बाद शुक्रवार को अक्षय तृतीया के पर्व पर श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे और इसके साथ ही इस साल की चारधाम यात्रा का आरंभ हो जाएगा। मंदिर समितियों ने बताया कि केदारनाथ और यमुनोत्री के कपाट सुबह सात बजे खुलेंगे जबकि गंगोत्री के कपाट दोपहर बाद 12 बजकर 20 मिनट पर खुलेंगे। उनके अनुसार चारधाम के नाम से प्रसिद्ध धामों में शामिल एक अन्य धाम बदरीनाथ के कपाट 12 मई को सुबह छह बजे खुलेंगे। बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति के मीडिया प्रभारी हरीश गौड़ ने बताया कि केदारनाथ मंदिर के कपाटोद्घाटन के लिए मंदिर को फूलों से सजाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि दानदाताओं के सहयोग से मंदिर को विभिन्न प्रजातियों के करीब 20 क्विंटल फूलों से सजाया

जा रहा है जो हेलीकॉप्टर के माध्यम से वहां पहुंचाए गए हैं।

चारधाम यात्रा पंजीकरण बुलेटिन के अनुसार, वेब पोर्टल, मोबाइल एप और व्हाटसएप के माध्यम से अब तक पंजीकरण की संख्या 22,28,928 पहुंच चुकी है। इस बार भी सरकार ने चारों धामों के कपाट खुलने के अवसर पर हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराने की घोषणा की है। इस बीच, 4050 श्रद्धालुओं को लेकर 135 वाहन ऋषिकेश से चारधामों के लिए रवाना हुए। वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने कहा कि इस वर्ष चारधामों के दर्शन के लिए रिकार्ड संख्या में श्रद्धालु पहुंचेंगे। हर साल गर्मियों में होने वाली चारधाम यात्रा के शुरू होने का स्थानीय जनता को भी इंतजार रहता है। छह माह तक चलने वाली इस यात्रा के दौरान देश-विदेश से आने वाले लाखों श्रद्धालु और पर्यटक जनता के रोजगार और आजीविका का साधन हैं और इसीलिए चारधाम यात्रा को गढवाल हिमालय की आर्थिकी की रीढ़ माना जाता है। चारों धामों के सर्दियों में भारी बर्फवारी और भीषण ठंड की चपेट में रहने के कारण उनके कपाट हर साल अक्टूबरनवंबर में श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिये जाते हैं जो अगले साल दोबारा अप्रैल-मई में फिर खोल दिये जाते हैं ।

'बाहुबली : क्राउन ऑफ ब्लड' अपने भव्य एनिमेशन से दर्शकों को लुभाएगी : राजामौली

मुंबई/एजेन्सी

दक्षिण भारतीय फिल्मों के जानेमाने निर्देशक एस.एस. राजामौली का कहना है कि बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड अपने भव्य एनिमेशन, भावनात्मक गहराई और पेचीदा किरदारों से दर्शकों को लुभायेगी। 'बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड' का प्रोडक्शन ग्राफिक इंडिया और आर्का मीडियावर्क्स प्रोडक्शन ने किया है। यह एस.एस. राजामौली और शरद देवराजन की पेशकश है। इसकी स्ट्रीमिंग 17 मई, 2024 से सिर्फ डिज़्नी+ हॉटस्टार पर होगी। डज़्नी+ हॉटस्टार ने हैदराबाद के एएमबी सिनेमास में अपनी आगामी एनिमेटेड सीरीज बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड की दुनिया से पर्दा हटाया। बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड की पूरी टीम भी वहां मौजूद थी। बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड का निर्माण एस.एस. राजामौली, शरद देवराजन और शोबु यार्लागड्डा ने किया है। निर्देशन जीवन जे. कांग और नवीन जॉन ने किया है।

एस.एस. राजामौली ने कहा, हैदराबाद की मेरे दिल में एक खास जगह है। बाहुबली फ्रैंचाइज़ी इसी शहर में बना था। बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड के साथ बाहुबली की कहानी के नये अध्याय से पर्दा

हटाने के लिये हैदराबाद आकर बेहतरीन लग रहा है। ग्राफिक इंडिया, आर्का मीडियावर्क्स और डिज़्नी+ हॉटस्टार के साथ मिलकर काम करने का अनुभव शानदार था। भारत में पुराना एनिमेशन लाने के लिये उनका जुनून और समर्पण प्रेरक था। साथ मिलकर हमने ऐसी कहानी बुनी है, जो न सिर्फ बाहुबली की दुनिया का विस्तार करती है, बल्कि अपने भव्य एनिमेशन, भावनात्मक गहराई और पेचीदा किरदारों से दर्शकों को भी लुभाएगी। साम्राज्यों की टक्कर देखने के लिये तैयार हो जाइये, क्योंकि माहिष्मती के महान योद्धा डिज़्नी+ हॉटस्टार पर बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड में अपनी मातृभूमि को बचाने के लिये एकजुट होंगे।

गौरव बैनर्जी, हेड- कंटेन्ट, डिज़्नी+ हॉटस्टार एंड एचएसएम एंटरटेनमेंट नेटवर्क, डिज़्नी स्टार ने कहा, डिज़्नी+ हॉटस्टार में हम हमेशा ऐसी कहानियां लाने पर यकीन रखते हैं, जो देशभर के लोगों को पसंद आएं। और बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड के साथ हमारा मकसद एनिमेशन को नई उंचाइयों पर पहुंचाना है। महान फिल्मकार एस.एस. राजामौली के साथ काम करना और ग्राफिक इंडिया के साथ हमारी लंबी भागीदारी उसी दिशा में एक कदम है। बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड हर किसी के लिये है। चाहे आप बाहुबली फ्रैंचाइज़ी के प्रशंसक हों या इसका पहली बार अनुभव करने जा रहे हों। यह सभी को पसंद आने वाला है।

बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड के सह-रचनाकर, लेखक एवं निर्माता शरद देवराजन ने कहा, बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड को बनाना ग्राफिक इंडिया में हम सभी के लिये एक बेहतरीन सफर रहा। जब हमने यह प्रोजेक्ट शुरू किया था, तब हम जानते थे कि हमारे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी है। हमें ऐसी एनिमेटेड सीरीज बनानी थी, जो बाहुबली फ्रैंचाइज़ी की विरासत के मुताबिक हो। एस.एस. राजामौली जैसे दूरदर्शी फिल्मकार के साथ काम करना सम्मान की बात थी। उनकी प्रेरणा और सहयोग से हमने लगातार काम किया और ऐसी कहानी बना दी, जो फिल्मों के शौकीन लोगों को बाहुबली की दुनिया गहराई से दिखाएगी। इसमें माहिष्मती की अनकही कहानियाँ और छुपे रहस्य होंगे। आकर्षक एनिमेटेड दृश्यों, पेचीदा किरदारों और दिलचस्प कहानियों के साथ, बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड भारतीय एनिमेशन के परिदृश्य को बदलने के लिये तैयार है। हम बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं कि डिज़्नी+ हॉटस्टार पर दर्शक इसका अनुभव लें।'' बाहुबली की आवाज़ बने शरद केलकर ने कहा, मैंने कई किरदारों को अपनी आवाज़ दी है, लेकिन बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड की मेरे दिल में एक खास जगह है। मैं इस फ्रैंचाइज़ी के साथ लंबे वक्त से जुड़ा हूँ। बाहुबली: क्राउन ऑफ ब्लड इस फ्रैंचाइज़ी को प्रशंसकों और नये दर्शकों के लिये नई उंचाई देती है। इस किरदार को अपनी आवाज़ देना मेरे लिये किसी सपने के जैसा रहा। मुझे लगा कि मैं एक नई दुनिया में कदम रख रहा हूँ, जो पहले किसी ने नहीं देखी।

मैं भाग्यशाली हूं कि 'पीरियड ड्रामा' का चेहरा बन गई हूं: अदिति राव हैदरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। अभिनेत्री अदिति राव हैदरी को ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों पर आधारित फिल्मों और शो (पीरियड ड्रामा) में अभिनय के लिए पहचान पाने पर सुखद अनुभूति होती है, लेकिन अब वह किसी अच्छी 'मिस्ट्री थ्रिलर' फिल्म में काम करना चाहती हैं।

हैदरी को हाल में संजय लीला भंसाली की विभाजन के पूर्व के कालखंड पर आई शृंखला 'हीरामंडी: द डायमंड बाजार' में देखा गया। 'पीरियड ड्रामा' में उनके काम की शुरुआत 2018 में आई भंसाली की फिल्म 'पद्मावत' के साथ हुई थी जिसमें उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी की पत्नी मेहरुनिस्सा का किरदार अदा किया था। उन्होंने इस बीच 'ताज : डिवाइडेड बाई ब्लड' और

'जुबिली' जैसे 'पीरियड ड्रामा' शो में भी काम किया।

हैदरी को पिछले जमाने की कहानियों पर बने शो से जुड़े होने और उनका चेहरा बन जाने से खुशी मिलती है, लेकिन वह खुद को एक ही ढांचे में सीमित नहीं रखना चाहतीं। उन्होंने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे इन बेहतरीन पीरियड ड्रामा का चेहरा बनने का मौका मिला। किसी कारण से, लोगों और निर्देशकों को लगता है कि यह मेरे लिए कारगर है और मैं इसका हिस्सा हूं। मैं भी बहुत सहज महसूस करती हूं (पीरियड ड्रामा में काम करते हुए)। शायद यह संगीत, नृत्य, इतिहास और संस्कृति के प्रति मेरा प्यार है। पीरियड ड्रामा आपको उस जगह ले जाते हैं जो वास्तव में भारतीय है। 'हीरामंडी' में भी यह संपूर्ण भारतीय कला सौंदर्य, नृत्य, संगीत है। मैंने वास्तव में इसका आनंद उठाया। उन्होंने कहा, मेरे अंदर का कलाकार विविधतापूर्ण और समकालीन भूमिकाएं भी अदा करना चाहता है।

हैदरी ने कहा कि वह मार्शल आर्ट आधारित फिल्म 'क्राउचिंग टाइगर, हिडन ड्रैगन' और मनोवैज्ञानिक थ्रिलर फिल्म 'गॉन गर्ल' जैसी परियोजनाओं पर भी काम करना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि बहुत सारे लोग भंसाली का नाम भव्यता और शानदार प्रस्तुति से जोड़ते हैं लेकिन उनका मानना है कि भंसाली गहराई से काम करने वाले निर्देशक भी हैं।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com
चेन्नई | शुक्रवार | 10-05-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY
RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

कर्नाटक इनरवियर एसोसिएशन के सदस्यों की एक विशेष बैठक कॉटनपेट स्थित पूर्वी प्लाजा में हुई जिसमें इस वर्ष 16 से 18 जुलाई तक आयोजित ट्रेड फेयर के बारे में विस्तार से चर्चा हुई।

जो भगवान व गुरु भक्ति में विश्वास करते हैं वे प्रभु प्राप्ति करते हैं : आचार्यश्री प्रसन्नसागर

होसूर रोड सत्यसाईं निलयम में होगा अक्षय तृतीया कार्यक्रम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। अंतर्मना 108 आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी म.सा. कर्नाटक जैन भवन से जयनगर स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से विल्सन गार्डन स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर होते हुए शहर के होसूर रोड स्थित सत्यसाई निलयम सभागार पहुंचे और सत्य साई संस्कृत सदनम में मंगल प्रवेश किया। पन्नालाल सरावगी सरोज सरावगी परिवार द्वारा आचार्य संघ के मंगल आगमन पर आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी के चरण प्रक्षालन कर आरती उतारी और पुष्प वृष्टि की। आचार्य संघ भव्य सभा मण्डप में विराजित हुए। उपाध्यायश्री पीयूष सागरजी महाराज ने सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान, सम्यकचारित्र विषय पर 10 से 12 मई तक आयोजित होने वाली प्रवचन माला के बारे में बताया और अक्षय तृतीया के पर्व के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि जो अक्षय तृतीया के दिन मुनिराज को आहार देता है, वह साल भर के पुण्य को एक ही बार में अर्जित कर लेता है ।

सभागार में विशेष धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री प्रसन्नसागरजी म.सा. ने कहा कि जो भगवान के प्रतिदिन दर्शन करते हैं, गुरुओं की वाणी को चित्त लगाकर प्रीतिपूर्वक सुनते हैं, वे नियम से भगवान को प्राप्त होते हैं । आत्मा से ध्यान करो, गुरुभक्ति करो। आचार्य मानतुंग ने, आचार्य समंतभद्र ने भक्ति से भगवान को पाया। आचार्यश्री ने कहा कि ये तीन कार्य व्यर्थ हैं, पहला सब को खुश करने की कोशिश, दूसरा बदले का भाव और गुजरे हुए वक्त में डूबे रहना। संसार स्वार्थ से चलता है। आप कुछ भी करो, कुछ भी कहो, ये संसार बिन स्वार्थ के नहीं चल सकता । बेटे चार प्रकार के होते हैं पहला पुत्र, एक पिछले जन्म का लेनदार बेटा । उसे आप कितना भी पढ़ाओ, कितना भी लिखाओ, उसका विवाह करो, उसका लेन देन पूरा हुआ और चल बसा, तो समझना वो लेनदार पुत्र था। दूसरा पुत्र पिछले जन्म का बैरी भी पुत्र होकर आता है। ऐसा पुत्र कदम-कदम पर दुःख देता है, ऐसा पुत्र, पुत्र के रूप में दुश्मन होता है और पिछले जन्म का पूरा बदला लेता है । तीसरा पुत्र उदासीन पुत्र होता है , ऐसा पुत्र माँ-बाप को न सुख देता है, न दुःख ,बस कहने का पुत्र होता है । चौथा पुत्र होता है- सेवक पुत्र। पिछले जन्म में आपने किसी की सेवा की और वही आपका पुत्र बनकर आ गया । ऐसा पुत्र सेवा करके सुख देता है, माँ-बाप की जी जान से सेवा करता है। बुढ़ापे का सहारा बनता ही है। माँ-बाप की कीर्ति को भी बढ़ाता है।

कर्नाटक इनरवियर एसोसिएशन का वार्षिक ट्रेड फेयर 16 जुलाई से

तीन दिवसीय ट्रेड फेयर की तैयारी बैठकें शुरु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक इनरवियर एसोसिएशन के सदस्यों की एक विशेष बैठक कॉटनपेट स्थित पूर्वी प्लाजा में हुई जिसमें इस वर्ष 16 से 18 जुलाई तक आयोजित ट्रेड फेयर के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। ज्ञातव्य है कि एसोसिएशन इनरवियर व्यापार के विकास व नेटवर्किंग के लिए प्रतिवर्ष 3 दिवसीय ट्रेडफेयर का आयोजन करता है जिसका सभी संबंधित व्यापारियों को बहुत इंतजार रहता है। इसी ट्रेड फेयर के आयोजन के संबंध में यह बैठक हुई। एसोसिएशन के अध्यक्ष दिलीप जैन ने सभी का स्वागत किया तथा ट्रेड फेयर को सफल बनाने के लिए अपील की। उपाध्यक्ष अश्विन सेमलानी ने बताया कि ट्रेड फेयर की तैयारियां शुरु हो गई है, व्यापारियों से सम्पर्क करना शुरु कर दिया गया है। सचिव रविन्द्र बम्बोली ने बताया कि यह तीसरा वार्षिक ट्रेड फेयर इस बार पैलेस ग्राउंड स्थित गायत्री विहार सभागार में होगा। इस बैठक में कोषाध्यक्ष प्रकाश जैन, सहसचिव सैंकी जैन, सहकोषाध्यक्ष विनोद चौहान, मूलसिंह राजपुरोहित, राजेश चौपड़ा, अश्विन जैन, गौरव शर्मा, मनोज कुमार आदि अनेक सदस्य उपस्थित थे।

संत विरागमुनि आदि के संयम दशक वर्ष महोत्सव में शामिल हुए शहरवासी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। पन्यासश्री विनयकुशलमुनिजी के शिष्य मुनिश्री विरागमुनिजी, भव्यमुनिजी, साध्वीश्री जयशिशुविरतीयशाश्रीजी व विनम्रयशाश्रीजी के संयम ग्रहण का दशक वर्ष दिवस कैवल्य धाम ट्रस्ट के तत्वावधान में बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बेंगलूरु से भी अनेक श्रद्धालु केवल्य धाम पहुंचे और संतों को शुभकामनाएं दी। ललित डाकलिया ने बताया कि डाकलिया परिवार के चारों मुमुक्षुओं ने करोड़ों रुपए की सम्पत्ति का त्याग करके दस वर्ष पूर्व आज ही के दिन राजस्थान के पाली में संतश्री विनयकुशलमुनिजी के कर कमलों से जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की थी। दशक वर्ष दिवस के साथ अक्षय तृतीया पर्व पर गणाधीश पन्यासश्री विनयकुशलमुनिजी के वर्षीतप का पारणा भी सम्पन्न होगा तथा मेडिकल कॉलेज और करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक छोटीवय के मुमुक्षु अरिहंत जैन की जैन भागवती दीक्षा के मुहुर्त की भी घोषणा की जाएगी।

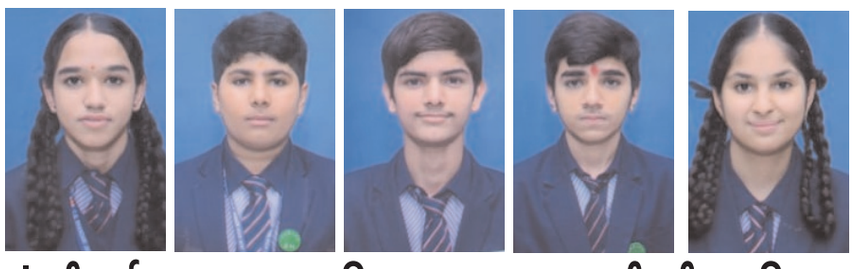

भंडारी हाईस्कूल का शत प्रतिशत रहा एसएसएलसी परीक्षा परिणाम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के किल्लारी रोड स्थित सीबी भंडारी जैन हाईस्कूल का एसएसएलसी परीक्षा(दसवीं) का परिणाम 100 प्रतिशत रहा। 27 विद्यार्थियों ने डिस्टिंक्शन प्राप्त की,50 विद्यार्थियों ने प्रथम व 8 विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की। स्कूल की गीताकुमारी ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल में प्रथम, कुलदीप कुमार ने 93.92 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय तथा भावेश एस ने 93.76 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

डिम्पल एन 93.44 प्रतिशत के साथ चौथे तथा राहुलकुमार 93.12 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पांचवें स्थान पर रहे। स्कूल प्रबंधन व शिक्षकों ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

तेयुप राजाजीनगर की 'वीतराग पथ कार्यशाला' में संयम पथ पर अग्रसर होने के तरीके बताए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। तेरापंथ साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी एवं उदितयशाजी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप राजाजीनगर द्वारा बेंगलूरु स्तरीय वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में राजाजीनगर में किया गया। राजाजीनगर सभा के अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी एवं तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी का स्वागत किया।

साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी ने कहा कि हम सबका परम लक्ष्य राग से वीतराग की ओर बढ़ने का होना चाहिए। हमें संयममय जीवन जीना चाहिए और वीतराग पथ की ओर अग्रसर होने के सभी प्रयास करना चाहिए। पहले अभिभावक अपने दैनिक जीवन में धर्म के प्रति जागरूक बने जिसे देखकर बच्चे आगे बढ़ सकते हे।

साध्वीश्री ने उदाहरण के माध्यम से वीतरागता की ओर बढ़ने के तरीके बताए। साध्वीश्री उदितयशाजी अपने जीवन मे सयंम का बीज बोने का तरीका बताया। जीवन में हमको सही राह धर्म के मार्ग पर बढ़ने से मिलेगी एवं हम परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते है। साध्वीश्री दीक्षाप्रभाजी ने अपने दीक्षा एवं वैराग्य संबंधित जानकारी प्रदान की। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री से वीतराग एवं दीक्षा संबंधित कुछ प्रश्नों के उत्तर हेतु निवेदन किया।

अभातेयुप बेंगलूरु संभाग प्रमुख अमित दक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अभिभावकों से बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ने हेतु निवेदन किया। कार्यशाला में लगभग 160 से अधिक सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर राजस्थान सहाड़ा विधानसभा क्षेत्र के विधायक लादूलाल पितलिया, सभा पूर्व अध्यक्ष शांतिलालजी पितलिया, राजाजीनगर सभा परिवार, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी, तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोकरना, तेयुप गांधीनगर मंत्री रोहित कोठारी सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। मंच संचालन एवं आभार राजेश देरासरिया ने किया।

प्रज्ज्वल रेवन्ना के खिलाफ कोई भी पीड़िता शिकायत दर्ज कराने नहीं पहुंची : राष्ट्रीय महिला आयोग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु/नई दिल्ली। कर्नाटक के सांसद प्रज्जवल रेवन्ना के खिलाफ राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) में शिकायत दर्ज कराने के लिए कोई भी पीड़िता आगे नहीं आई और इसके पास पहुंची एक महिला शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि उसे जनता दल (सेक्युलर) नेता के खिलाफ फर्जी शिकायत दर्ज करने के लिए मजबूर किया गया था। आयोग ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। आयोग ने कहा कि संबंधित अधिकारियों द्वारा समय पर कार्रवाई रिपोर्ट (एटीआर) प्रस्तुत करने से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आते हैं। इसने कहा कि मामले की गहन जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) समिति का गठन किया गया है।

आयोग के अनुसार एटीआर से पीड़ितों द्वारा यौन शोषण की शिकायतों के आधार पर दो मामलों के पंजीकरण का संकेत मिलता है। इसके साथ ही एक रिश्तेदार द्वारा अपहरण के लिए दायर एक अतिरिक्त शिकायत भी दर्ज की गई। इसने कहा कि इस मामले में हालांकि कोई भी पीड़िता आयोग में शिकायत दर्ज कराने के लिए आगे नहीं आई है। आयोग ने दावा किया, एक महिला शिकायतकर्ता तीन व्यक्तियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए आयोग में आई थी। इस महिला ने खुद को कर्नाटक पुलिस अधिकारी के रूप में कथित तौर पर पेश किया और उन पर इस मामले में झूठी शिकायत देने के लिए दबाव डाला गया।

आयोग ने कहा, ''महिला ने बताया कि उसे कई फोन नंबरों से कॉल कर शिकायत करने की धमकी दी जा रही है। पीड़िता ने स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करते हुए अपने परिवार के लिए सुरक्षा की मांग की है।'' एक अन्य घटनाक्रम में आयोग ने कहा कि ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने वाली 700 महिलाएं एक सामाजिक कार्यकर्ता समूह से जुड़ी हैं और मामले में मुख्य शिकायतकर्ता के साथ उनका कोई प्रत्यक्ष जुड़ाव या संबंध नहीं है।

आयोग ने एक पोस्ट में कहा, ''एनसीडब्ल्यू बताना चाहेगा कि प्रज्जवल रेवन्ना मामले में 700 महिलाओं ने एनसीडब्ल्यू को कोई शिकायत नहीं दी है। कुछ मीडिया चैनल इस संबंध में गलत खबर चला रहे हैं।'' पुलिस ने घर में काम करने वाली एक महिला की शिकायत के आधार पर प्रज्जवल रेवन्ना और उनके पिता जद (एस) विधायक एवं पूर्व मंत्री एचडी रेवन्ना के खिलाफ यौन उत्पीड़न और आपराधिक धमकी देने का मामला दर्ज किया था। प्रज्जवल (33) हासन लोकसभा सीट से भाजपा-जद(एस) गठबंधन के उम्मीदवार हैं। इस सीट पर 26 अप्रैल को मतदान हुआ था।

शत प्रतिशत रहा आदर्श हाईस्कूल का दसवीं का परिणाम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। आदर्श विद्या संघ के अंर्तगत संचालित कुशलचन्द हस्तीमल सिसोदिया आदर्श हाईस्कूल का एसएसएलसी परीक्षा(दसवीं) का परिणाम 100 प्रतिशत रहा। परीक्षा देने वाले स्कूल के सभी विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

कोमल एम ने 97.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अव्वल रहीं। पूजा पुरोहित ने 92 प्रतिशत, पायल कंवर ने 86.72 प्रतिशत व लब्धि जैन ने 85.92 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

महिला अपहरण मामला

रेवन्ना की जमानत याचिका पर सुनवाई 13 तक टली

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए यहां की एक विशेष अदालत ने बृहस्पतिवार को अपहरण के एक मामले में जद (एस) विधायक एच.डी. रेवन्ना की जमानत याचिका पर सुनवाई 13 मई तक के लिए स्थगित कर दी। पूर्व मंत्री रेवन्ना को विशेष जांच दल (एसआईटी) ने एक महिला के अपहरण के कथित मामले में गिरफ्तार किया था और उन्हे आठ मई तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया था।

अपहरण का मामला रेवन्ना के बेटे और हासन से सांसद प्रज्जवल रेवन्ना द्वारा महिलाओं के यौन शोषण के आरोपों से जुड़ा है। पुलिस हिरासत की अवधि पूरी होने के बाद रेवन्ना (66) को बुधवार को अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया।

अदालत ने उन्हें 14 मई तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया। मामला महिला के बेटे की शिकायत के बाद दर्ज किया गया था, जिसने आरोप लगाया था कि रेवन्ना के बेटे प्रज्जवल ने उसकी मां का यौन शोषण किया था। एसआईटी ने रेवन्ना के विश्वासपात्र सतीश बबन्ना को भी हिरासत में लिया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि प्रज्जवल के खिलाफ गवाही देने से रोकने के लिए महिला का कथित तौर पर अपहरण किया गया था।

प्रज्जवल द्वारा कई महिलाओं के यौन शोषण के आपत्तिजनक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे थे।

उसके आधार पर कर्नाटक राज्य महिला आयोग द्वारा मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को पत्र लिखे जाने के बाद राज्य सरकार ने 28 अप्रैल को मामले की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया।

हासन लोकसभा क्षेत्र से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार प्रज्जवल (33) चुनाव के एक दिन बाद 2% अप्रैल को कथित तौर पर देश छोड़कर चले गए। एसआईटी ने उन्हें पेश होने के लिये समन भी भेजा था लेकिन वह पेश नहीं हुए। गृह मंत्री जी. परमेश्वर के मुताबिक इस मामले में एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है।

राजाजीनगर की तेरापंथ महिलाओं ने आयोजित की 'पौध को सींचे' कार्यशाला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल राजाजीनगर के तत्वावधान में बुधवार को 'पौध को सींचे'कार्यशाला का आयोजन साध्वीश्री उदितयशाजी के सान्निध्य में लक्ष्मीलाल रोशनलाल कोठारी के निवास पर किया गया। अध्यक्षा उषा चौधरी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा की बचपन से ही बच्चो में संस्कारों का बीज बोना चाहिए। साध्वी उदितयशाजी ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अभिभावकों को हमेशा क्षमा और कृतज्ञ भाव को जीवन में धारण करना चाहिए। माता की क्रिया से ही बालक में सही व गलत के संस्कार पल्लवित होते हैं। गर्भ से ही बच्चा माता के जरिए बाहरी दुनिया व संस्कारों से परिचित होता है। संस्कार और संगत का बच्चों पर बहुत असर होता है।

प्रोविजनल जोनल ट्रेनर लता नवलखा ने यह बताया कि बच्चों की परवरिश में प्यार और स्नेह की नींव तथा बच्चों में जिम्मेदारी के गुण को विकसित करना चाहिए। बच्चो की प्रतिभाओं की पहचान कर उनके सपनों को पूरा करने में हर संभव मदद करनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री सरिता संचेती ने किया। संगठन मंत्री रंजीता बोथरा ने आभार ज्ञापित किया।

'महावीर को मानने से ज्यादा, प्रभु महावीर की वाणी मानना जरुरी'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेलगावी। स्थानीय चन्द्रप्रभस्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर में आचार्यश्री महेन्द्रसागरसूरीश्वरजी सहित सहयोगी संतों का मंगल प्रवेश हुआ। संघ ने गुरुवर्यों का स्वागत सामैया से किया। इस मौके पर आयोजित प्रवचन में आचार्यश्री ने कहा कि आज जरुरत है कि भगवान महावीर में विश्वास रखने वाले लोगों की, न कि केवल मंदिरों में उनकी पूजा-आरती अभिषेक करने वालों की। हमें अपने पंथ परम्पराओं की चारदीवारी में बंधकर नहीं रहना चाहिए। हमें प्रभु महावीर के दिए गए अहिंसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग, क्षमा जैसे सिद्धांतों पर विश्वास करने उनका विश्व में प्रचार करना चाहिए। हमें प्रभु महावीर को मनाने से ज्यादा महावीर की वाणी को मानना होगा। प्रभु महावीर के सिद्धांतों के प्रचार से हम विश्व में शांति कायम कर सकते हैं और विश्व मैत्री और विश्व शांति का सपना साकार होता दिखेगा। प्रवचन में बड़ी संख्या में संघ के श्रावक श्राविका उपस्थित रहे। गुरुवार को राणीबेन्नूर से गुरुदर्शन के लिए अनेक श्रावक श्राविकाएं उपस्थित हुए।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.